इकाई 16 राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जान सकेंगे कि यूरोप में राष्ट्रवाद के विचारों का उदय कैसे हुआ;
- राष्ट्र-राज्य के निर्माण में आधुनिक राज्य और राष्ट्रवाद की भूमिका पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- लोगों को संगठित करने और राष्ट्रवाद तथा राष्ट्र-राज्य के विकास में भाषा और जनतांत्रिक राजनीति की भूमिका को रेखांकित कर सकेंगे; और
- कुछ पूर्वी यूरोपीय देशों में राष्ट्रीय अस्मिताओं के विकास के विभिन्न चरणों के बारे में जान सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

राष्ट्रवाद एक आधुनिक परिघटना है। हालांकि इस विचार को इससे पहले के काल में भी देखा जा सकता है परंतु आधुनिक राष्ट्रवाद का उदय 18वीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में ही हुआ था। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान यह पूरी दुनिया में फैल गया। आधुनिक राज्य में राष्ट्रवाद का तत्व मिल जाने से राष्ट्र-राज्य का

उदय हुआ। कई मामलों में तो आधुनिक राज्य ने लोगों के बीच राष्ट्रवाद की चेतना का संचार किया और इसकी सीमाओं में रहने वाले लोगों को राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित किया। दोनों ने मिलकर जनता को संगठित किया जिसने राज्य को मजबूती प्रदान की और राष्ट्र-राज्यों के निर्माण में सहायता मिली।

16.2 राष्ट्रवाद का अर्थ

मार्च 1882 में सोरबोन में दिए अपने भाषण में फ्रांसीसी प्राच्यविद और इतिहासकार अर्नेस्ट रेनन ने कहा था कि राष्ट्र एक आध्यात्मिक समुदाय है जो रोजमर्रा के विश्वास के आधार पर अपने बीच एकता स्थापित करता है। **मार्क्सवाद और राष्ट्रीय प्रश्न** शीर्षक के अपने एक लेख में जोसफ स्टैलिन लिखते हैं कि "एक राष्ट्र ऐतिहासिक रूप से निर्मित होता है जिसमें एक स्थाई समुदाय के लोग रहते हैं और इसका निर्माण समान भाषा, क्षेत्र, आर्थिक जीवन और मनोवैज्ञानिक बनावट अर्थात कुल मिलाकर एक समान संस्कृति के आधार पर होता है"। हालांकि स्टैलिन के 'भौतिकवादी' विश्लेषण के विपरीत रेनन ने राष्ट्र की एक 'आदर्शवादी' परिभाषा प्रस्तुत की है परंतु यह एक रोचक तथ्य है कि दोनों ही लेखक इस बात को स्वीकार करते थे कि राष्ट्र कभी भी अमर या शाश्वत नहीं होते। राष्ट्रों की शुरुआत भी होती है और अन्त भी होता है।

राष्ट्रवाद के संस्थापक अध्ययनकर्ता हैन्स कोहन का मानना था कि "राष्ट्रीयताएं इतिहास की जीवित शक्तियों की उपज हैं इसलिए ये अटल नहीं होतीं और इनमें हमेशा उतार चढ़ाव होता रहता है"। राष्ट्रीयताओं की पहचान कुल, वंश, जनजाति या लोक समूहों से नहीं बनती और न ही समान अतीत या समान निवास स्थान मात्र से ही उनका संबंध होता है। कोहन यह तर्क देते हैं कि "आदिम जातियों के पास प्राचीन काल से एक इतिहास रहा है परंतु अभी तक उनमें राष्ट्रीयताओं का निर्माण नहीं हो पाया है; वे और कुछ नहीं बल्कि 'नृजातीय सामग्री' हैं जिसमें से कुछ विशेष परिस्थितियों में एक राष्ट्रीयता का उदय हो सकता है। एक राष्ट्रीयता का जन्म हो सकता है, मृत्यु हो सकती है या फिर किसी बड़ी राष्ट्रीयता में विलयन हो सकता है।

कोहन का मानना था कि "राष्ट्रवाद का विचार और स्वरूप राष्ट्रवाद के युग से पहले ही विकसित हो चुका था।" प्राचीन हेब्रू और ग्रीकों के समय से ही राष्ट्रवाद का विचार मौजूद था। प्राचीन काल में यहूदियों के बीच, चुने हुए लोगों की संकल्पना, राष्ट्रीय इतिहास की चेतना और राष्ट्रीय मसीहा, के रूप में राष्ट्रवाद के तीन लक्षण मौजूद थे। परंतु वे यह मानते हैं कि अपने 'प्रचंड राष्ट्रीय विचारधारा' के बावजूद ग्रीकों में "राजनैतिक राष्ट्रवाद" नहीं था और केवल फारसी युद्धों के दौरान ही थोड़े समय के लिए देशभक्ति का उदय हुआ था।

हालांकि प्राचीन काल से ही राष्ट्र का विचार मौजूद था और सोलहवीं शताब्दी में तो इसके प्रमाण भी मिलते हैं। मसलन जर्मन शब्द फोक्स का इस्तेमाल जनता के लिए किया जाता था। परंतु अधिकांश इतिहासकार इस बात पर काफी हद तक सहमत हैं कि राष्ट्रवाद एक आधुनिक अवधारणा है। अन्य मुद्दों पर असहमति के बावजूद बेन्डिक्ट एन्डरसन, अर्नेस्ट गेलनर और एरिक हॉब्सबाम इस बात पर सहमत हैं कि राष्ट्रवाद एक ऐसी परिघटना है जिसका उदय पश्चिमी यूरोप में 18वीं शताब्दी में हुआ और बाद में 19वीं तथा 20वीं शताब्दी में दुनिया के अन्य भागों में इसका प्रसार हुआ। **अधिकांश विद्वानों का मानना है कि आधुनिक राष्ट्रवाद का उदय औद्योगिक पूंजीवाद या मुद्रण पूंजीवाद के साथ हुआ और इसमें कई कारक शामिल हुए जैसे भाषा, जातीयता या धर्म पर आधारित समुदाय या राज्यों या कल्पित समुदायों के बीच प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता।**

मार्क्सवादी परम्परा में राष्ट्रवाद की परिभाषा मार्क्स, एंगेल, लेनिन और स्टालिन से होती हुई हॉब्सबॉम तक पहुंची। मुख्य रूप से इस परम्परा में राष्ट्र को एक एतिहासिक रूप से विकसित परिघटना माना जाता है जिसका उदय सामंतवाद के पतन और पूंजीवाद के उदय के साथ हुआ था। जनजातियां, कुल, वंश और लोग पूंजीवाद के उदय से पहले भी मौजूद थे परंतु पूंजीवादी उत्पादन के तरीके के कारण नए आर्थिक संबंध विकसित हुए और परिणामस्वरूप राष्ट्रों का जन्म हुआ। राष्ट्रवाद को एक ऐसे वैचारिक आधार के रूप में देखा जाता है जिसने पूरे समाज के हितों के परिप्रेक्ष्य में बुर्जुआ वर्ग को एक वर्ग के रूप में अपने हितों की पहचान कराने में मदद पहुंचाई।

हॉब्सबॉम ने इस बात पर भी बल दिया है कि "प्रौद्योगिकी और आर्थिक विकास के किसी विशेष चरण" के संदर्भ में राष्ट्रों और राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। "हालांकि राष्ट्रवाद ऊपर से आरोपित किया गया था परंतु जनता की आकांक्षाओं, आशाओं, सोच, जरूरतों और हितों का विश्लेषण किए बिना राष्ट्रवाद को नहीं समझा जा सकता। यह अनिवार्य तौर पर राष्ट्रीय नहीं होते और अभी भी कम राष्ट्रवादी हैं।"

16.3 राष्ट्रवाद का विचार और राष्ट्र-राज्य

क्रांति के युग (1706 की अमेरिकी क्रांति और 1789 की फ्रांसीसी क्रांति) के दौरान राष्ट्रवाद की आधुनिक अवधारणा का जन्म हुआ। अमेरिकी राजनैतिक विकास में राष्ट्रवाद के एकीकरण के पक्ष पर बल नहीं दिया गया। अमेरिकी नेतृत्व जीवन के अधिकारों, स्वतंत्रता और खुशी की खोज के प्रति ज्यादा प्रयत्नशील थे और वे चाहते थे कि अमेरिकी संघ और राज्यों के बीच समुचित संबंध बना रहे और एक उदारवादी पूंजीवादी समाज का विकास हो। इसके विपरीत फ्रांस में राष्ट्र का अर्थ "एक और अभिभाज्य" माना गया। राष्ट्र का विचार अभिन्न रूप से जनभागीदारी, नागरिकता और जनता की सामूहिक संप्रभुता या एक राष्ट्रीयता से जुड़ा हुआ था। हॉब्सबॉम राष्ट्र की क्रांतिकारी जनतांत्रित और राष्ट्रवादी अवधारणा में फर्क करते हैं। राष्ट्र के क्रांतिकारी जनतांत्रिक दृष्टिकोण के अनुसार एक राज्य के भीतर संप्रभु नागरिक दूसरों के संदर्भ में एक राष्ट्र बनाते हैं जबकि राष्ट्रवादी विचारधारा के अनुसार समुदाय की खास विशेषताएं जो इसे दूसरों से अलग करती हैं और जो पहले से मौजूद होती हैं, एक राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक होती हैं। क्रांति के बाद फ्रांसीसियों द्वारा जबरदस्त ढंग से भाषाई एकरूपता पर बल दिया गया साथ ही यह भी दर्ज किया कि कितने कम लोग इस भाषा का प्रयोग करते हैं। राष्ट्र की क्रांतिकारी फ्रांसीसी अवधारणा में फ्रांसीसी बोलने की इच्छा प्रकट करना (फ्रांस में गैर फ्रांसीसी लोगों द्वारा) पूर्ण फ्रांसीसी नागरिकता पाने की एक शर्त थी।

इटली में एकीकरण और राष्ट्रवाद का एकमात्र आधार इतालवी भाषा थी। 1860 में इटली का एकीकरण हुआ और उस समय केवल 2.5% जनता रोजमर्रा की भाषा के रूप में इसका इस्तेमाल करती थी। इतालवी राष्ट्रवाद के जनक, युवा इटली के नेता मेजनी का मानना था कि राष्ट्र की लोक संप्रभुता अविभाज्य होनी चाहिए और संघीय इटली के सभी प्रस्ताव स्थानीय शासकीय वर्गों को अधिक से अधिक जीवित रखने के प्रयास मात्र थे। मेजनी का मानना था कि इटली की जनता का 'निर्माण' करना होगा ताकि इटली का विभाजन रोका जा सके। हालांकि जन इच्छा की एकता और पवित्रता में उसका एक रहस्यात्मक विश्वास था। मेजनी का कहना था कि 'लेखकों को जनता की जरूरतों' की खोज करनी चाहिए ताकि इतालवी साहित्य राष्ट्र को प्रेरित और प्रोत्साहित कर सके। राजनैतिक विकास को दिशा देने में साहित्य एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

16.4 राष्ट्रवाद के विकास के चरण

राष्ट्रवाद के उदय को मुख्य रूप से दो चरणों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम चरण की शुरुआत 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पहले के काल से मानी जा सकती है। जब राष्ट्रीय एकता की कुछ अवधारणा अपने आरंभिक रूप में उपस्थित थीं। प्रत्येक राष्ट्र में इसका इतिहास अलग-अलग हो सकता है परंतु भौगोलिक या सांस्कृतिक एकता आधुनिक राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि मात्र था। फ्रांस की क्रांति के बाद ही आधुनिक राष्ट्रवाद स्वरूप ग्रहण करने लगा। इस मामले में ब्रिटेन और फ्रांस अपवाद थे। वहां क्रमशः 16वीं और 17वीं शताब्दी से ही राष्ट्र निर्माण के प्रयास शुरू हो गए थे।

16.4.1 1789 के पहले राष्ट्रवाद : प्रारंभिक राष्ट्रवाद

ऐतिहासिक रूप से आधुनिक राष्ट्र और राष्ट्रवाद का उदय 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जन राजनीति का युग शुरू होने से राष्ट्रवाद का स्वरूप अधिक जनतांत्रिक हो गया। हालांकि इधर लिखी कुछ पुस्तकों में उत्तर-मध्ययुगीन यूरोप को समझने के लिए मध्ययुगीन अतीत में देखने पर बल दिया गया है।

19वीं शताब्दी के कई पर्यवेक्षकों का यह मानना था कि राष्ट्रवाद के तत्व मध्य युग में ही उभरने लगे थे; एकजातीय या भाषाई राष्ट्रीय पहचान के रूप में राष्ट्रवाद के ये तत्व सामने आए थे। इसे राष्ट्रभक्ति या राष्ट्रभक्तिवाद का एक रूप कहा जा सकता है। 19वीं शताब्दी के फ्रांसीसी इतिहासकार और राजनीतिज्ञ ग्यूजो का मानना था कि इंगलैंड और फ्रांस के बीच हुए सौवर्षीय युद्ध (1337-1453) ने, राष्ट्रवाद को हवा दी थी। इंगलैंड के राजा ने फ्रांस की गद्दी पर अपना दावा पेश किया था। इससे कुलीनवर्ग, किसान और मजदूर सबकी एक ही इच्छा थी कि उस विदेशी को हटाया जाय जिसने उस पर आक्रमण किया और उनके देश को लूटा है। हालांकि आधुनिक इतिहासकार इसे युद्ध, बीमारी और अकाल के कारण उत्पन्न संकट की स्थिति मानते हैं परंतु इसने देशभक्ति की भावना तो अवश्य पैदा की। बाद में राजतंत्र मजबूत हुआ और इसने एकीकृत फ्रांसीसी राज्य की स्थापना की। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि फ्रांस एक भौगोलिक यथार्थ है और यहां किसी केंद्रीकृत राजतंत्र द्वारा भौगोलिक एकता कायम करने का कोई महत्व ही नहीं था परंतु इस तर्क में बहुत दम नहीं है। भौगोलिक दृष्टि से गैलो-रोमन की कोई पूर्व नियति नहीं थी और फ्रांस की कोई वास्तविक प्राकृतिक सीमाएं भी नहीं थीं। फ्रांस के राष्ट्रवाद के निर्माण की घटना इतिहास का एक संयोग था और इस क्रम में एक दक्षिणी भूमध्यसागरीय फ्रांस, फ्रांसीसी इंगलिश साम्राज्य या यहां तक कि बुर्गुफ्रन्डियन फ्रांस का भी निर्माण हो सकता था।

13वीं शताब्दी के बाद से सामंती व्यवस्था के खिलाफ बड़े शहरों और ग्रामीण समुदायों के मुक्त किसानों के संघर्ष के कारण स्विस राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ। चार विभिन्न राष्ट्रीयताओं ने मिलकर 1648 में आधुनिक राज्य की स्थापना की। परंतु 1848 में उदारवादियों की विजय और नए संघीय संविधान के निर्माण के बाद ही एक विशिष्ट स्विस राष्ट्रीय चेतना का निर्माण हो सका।

16.4.2 आधुनिक राष्ट्रवाद : 19वीं शताब्दी

19वीं शताब्दी को राष्ट्रवाद की शताब्दी माना जाता है क्योंकि इसी युग में ब्रिटेन और फ्रांस के आधार पर राष्ट्र और राष्ट्र-राज्य का सामान्यीकरण किया गया था और इसे आधुनिक समाजों के लिए सार्वभौम माना गया था। फ्रेडरिक लिस्ट ने **द नेशनल सिस्टम ऑफ पॉलिटिकल इकोनोमी** (लंदन 1885) में लिखा था कि "एक बड़ी जनसंख्या और बृहद क्षेत्र, जिसमें कई प्रकार के राष्ट्रीय संसाधन उपलब्ध हों— एक सामान्य राष्ट्रीयता की अनिवार्य जरूरते हैं ....एक राष्ट्र अपनी जनसंख्या और क्षेत्र में सीमित होता है; खासतौर पर इसकी अपनी एक अलग भाषा होती है, इसके पास अपना एक सशक्त साहित्य होता है और कला तथा साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए सशक्त संस्थाएं होती हैं। एक छोटा राज्य अपने क्षेत्र के भीतर सम्पूर्ण नहीं बन सकता और उत्पादन की सभी जरूरतें वहां उपलब्ध नहीं होती।" व्यवहार में राष्ट्रवाद के उदारवादी युग में राष्ट्रीयता का सिद्धांत केवल कुछ खास आकार के राष्ट्रीयताओं पर ही लागू हो सकता था क्योंकि उस समय बड़े स्तर के राज्यों को ही बेहतर समझा जाता था। राज्यों के खास आकारों के बारे में इस उदारवादी धारणा को हॉब्सबॉम "राष्ट्रीयता का दहलीज सिद्धांत" कहते हैं जिसे 1830 और 1880 के बीच उदारवादी बुर्जुआ वर्ग का समर्थन प्राप्त था। जॉन स्टुअर्ट मिल, फ्रेडरिक एंगेल्स और मेजनी जैसे लोगों ने भी राष्ट्रीयता के इस दहलीज सिद्धांत को पहले भी स्वीकार किया था। इसी सिद्धांत के आधार पर राष्ट्रवाद के जनक मेजनी ने आइरिश स्वतंत्रता को अपना समर्थन नहीं दिया था। इसी प्रकार मिल और मेजनी के समय में राष्ट्रीय आत्म निर्धारण का सिद्धांत अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विलसन के युग से काफी अलग था। 1857 में मेजनी ने यूरोप का जो नक्शा बनवाया था उसमें केवल एक दर्जन राज्य और संघ थे। इसके विपरीत द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप ने राष्ट्रीय आत्म निर्धारण के सिद्धांत के आधार पर 26 राष्ट्र-राज्य बनाए थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद की अवधि में केवल पश्चिमी यूरोप में 42 क्षेत्रीय आंदोलनों की पहचान की गई। जनतांत्रिक राजनीति के युग में जन राजनीतिक आंदोलनों के उदय के साथ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद के बारे में नजरिया काफी बदल गया। 1880 के बाद राष्ट्रीय प्रश्न पर बहस महत्वपूर्ण हो गई क्योंकि अब विभिन्न राजनीतिक दलों को वोट जुटाना था और छोटे समाजवादियों या छोटे भाषाई समुदायों तथा राष्ट्रीय समूहों के बीच नई विचारधारा को फैलाना था। जन राजनीति और राष्ट्रीय आंदोलनों के अंतिम चरण में राज्य ने सक्रिय भूमिका अदा की। पोलैंड के उद्धारक कर्नल पिल्सुड्स्की का विश्वास था

कि "राष्ट्र राज्य का निर्माण करता है न कि राज्य राष्ट्र का"। राष्ट्र और राज्य के बीच के संबंध को चाहे जिस रूप में देखा जाए, चुनावी जनतंत्र कायम होने के बाद राष्ट्र के उदारवादी सिद्धांत का महत्व समाप्त हो गया।

16.5 राष्ट्रवाद और आधुनिक राज्य द्वारा राष्ट्र-राज्य का निर्माण

19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद की आदर्शतः शुरुआत हुई। फ्रांसीसी क्रांति के विचारों, नेपोलियन की जीत और इन विजयों के परिणामस्वरूप हुए राजनैतिक गठबंधनों के परिणामस्वरूप राष्ट्रवाद का उदय हुआ। यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास के लिए अनेक कारक जिम्मेदार थे। जर्मन साम्राज्य में राज्यों की संख्या में कमी करके यूरोप के राजनैतिक नक्शे को आसान बना दिया गया। प्रायद्वीपीय युद्ध के सैनिक अभियानों के दौरान स्पैनिश राष्ट्रवाद की धड़कने तेज हो गईं। फ्रांसीसी सेनाओं की प्रेरणा से इतालवी और जर्मन राष्ट्रवाद का उदय हुआ। राष्ट्र-राज्य के निर्माण में नेपोलियन की भी भूमिका थी। इसके अलावे यूरोप में जन्मे क्रांतिकारी और जनतांत्रिक विचारों ने राष्ट्रवाद के फैलने और विकास में मदद पहुंचाई। इसने बुद्धिजीवी वर्ग और बुर्जुआ वर्ग दोनों को प्रेरित किया जिनके नेतृत्व में इतालवी और जर्मन एकीकरण का आंदोलन चलाया गया। 19वीं शताब्दी के अंत में जन राजनीति का आगमन हुआ जिसने खासतौर पर पूर्वी यूरोप में राष्ट्रवाद को अतिरिक्त गति प्रदान की। यह क्षेत्र पश्चिमी यूरोप के अधिक औद्योगीकृत हिस्सों की अपेक्षा पिछड़ा हुआ था।

16.5.1 निरंकुशता और आधुनिक राज्य

पश्चिमी यूरोप के तानाशाही राज्यों ने सामंतवाद से पूंजीवाद की ओर क्रमशः विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 16वीं और 17वीं शताब्दी में यूरोप के निरंकुश शासकों ने केंद्रीकृत राज्यों और बड़ी संख्या में स्थाई सेना का निर्माण किया। तानाशाही राज्य अपने राज्य की सीमा के भीतर कराधान के लिए अपने अधिकारों का प्रयोग करते थे और वहां एकाधिकार स्थापित करने के लिए शक्ति का प्रयोग करते थे। तानाशाही शासकों के बीच हुए युद्ध के परिणामस्वरूप मजबूत केंद्रीकृत राज्यों का उदय हुआ था, युद्धों की लागत को पूरा करने के लिए राज्य कर लगाया करती थी और इस प्रकार तानाशाही शासकों की व्यापारिक नीतियों का प्रमुख उद्देश्य अन्य राज्यों की अपेक्षा अपनी आर्थिक और राजनैतिक शक्ति को मजबूत करना था। 16वीं और 17वीं शताब्दी के युद्धों ने "राज्य निर्माण प्रक्रिया के सभी आधारभूत तत्वों" को एक साथ जोड़ना शुरू कर दिया। इस युग के आर्थिक और सैन्य प्रतियोगिता में 500 से भी अधिक राजनैतिक इकाइयां और राज्य समाप्त हो गए परंतु 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवादी विचारधारा के उदय के बाद ही इटली और जर्मनी का राजनैतिक एकीकरण संभव हो पाया।

टिली के अनुसार " यूरोपीय राज्य निर्माण की प्रक्रिया के कारण राज्य के भीतर सांस्कृतिक विविधता में कमी आई और राज्यों के बीच विभिन्नता बढ़ी। राज्य के भीतर आंतरिक सांस्कृतिक विभिन्नता को कम किए जाने के साथ-साथ राज्य शक्ति को केंद्रीकृत किया गया और संप्रभुता की अवधारणा को आगे बढ़ाया गया जो अपने आप में निरंकुश और अमूर्त था। केंद्रीकरण के अपने प्रयास में राजाओं ने स्थानीय और प्रांतीय सभाओं या कुलीनतंत्र, पुजारियों या बुर्जुआ वर्ग द्वारा संप्रभु अधिकारों का प्रयोग करने की चेष्टा को दबाने का प्रयत्न किया। अन्ततः हौलैंड, इंगलैंड और फ्रांस में 'नीचे से क्रांति' हुई जिसने आधुनिक राज्य के मार्ग की सभी बाधाओं को हटा दिया। क्रांतियों के इस युग में केवल बुर्जुआ क्रांतियां हुईं जिसने अन्ततः आधुनिक पूंजीवादी राज्य की स्थापना की।

16.5.2 आधुनिक राज्य और राज्यों की व्यवस्थाएं

16वीं और 17वीं शताब्दी के बाद अर्थव्यवस्था के विकास तथा 19वीं शताब्दी के दौरान पूंजीवादी विकास और समूचे यूरोप में इसके अ-समान प्रसार के अध्ययन के लिए राज्यों की व्यवस्था का अध्ययन लाभदायक हो सकता है।

ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में औद्योगीकरण का विकास हुआ और आगे चलकर 19वीं शताब्दी में

यूरोप में उद्योगों का क्रमशः विकास हुआ। सब जगह औद्योगीकरण एक जैसा नहीं हुआ और जिन देशों में औद्योगीकरण देर से हुआ उन्हें पहले औद्योगीकृत हुए देश के मुकाबले नुकसान में रहना पड़ा। गेरशेनक्रोन ने अपनी पुस्तक *इकोनोमिक बैकवर्डनेस इन हिस्टोरिकल प्रोस्पेक्टिव* में लिखा है कि जर्मनी और रूस जैसे देशों में, जहां ब्रिटेन (यह पहला औद्योगिक देश था) के बाद औद्योगीकरण शुरू हुआ, राज्य की भूमिका अपेक्षाकृत ज्यादा थी। औद्योगीकरण देर से शुरू होने की भरपाई करने के लिए राज्य ने एक अनुकूल माहौल बनाने का प्रयास किया। कर संरक्षण की व्यवस्था लागू कर तीव्र औद्योगीकरण का माहौल तैयार किया गया और उद्योग के तीव्र उत्पादन की प्रक्रिया में सहायता प्रदान की गई।

ब्रिटेन की अपेक्षा जर्मनी में पूंजी का जमाव ज्यादा था और बैंकों तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों के बीच गहरा संबंध था। ब्रिटेन से मुकाबला करने के लिए और जर्मन अर्थव्यवस्था को एक संरक्षित दीवार के भीतर विकसित करने की दृष्टि से जर्मन अर्थशास्त्री फ्रेडरिक लिस्ट ने ब्रिटेन द्वारा प्रतिपादित मुक्त व्यापार उदारवादी पूंजीवाद के सिद्धांत को चुनौती दी। व्यापारियों और उद्योगपतियों ने राजनैतिक एकीकरण का समर्थन किया क्योंकि एक वर्ग के रूप में उनका स्वार्थ जर्मन उद्यमियों के लिए एक राष्ट्रीय बाजार के निर्माण से जुड़ा हुआ था। जर्मन बुर्जुआ वर्ग का मानना था कि जर्मन आर्थिक विकास के लिए जर्मन राष्ट्र-राज्य का निर्माण अनिवार्य था। नेपोलियन के नेतृत्व में फ्रांस द्वारा दी गई राजनैतिक चुनौती का जर्मन राष्ट्रवाद पर तो असर पड़ा ही परंतु इंगलैंड द्वारा दी गई आर्थिक चुनौती का भी इस पर कम प्रभाव नहीं पड़ा। इसका प्रभाव सभी जर्मनों पर एक सा पड़ा चाहे उनके आर्थिक और राजनैतिक आदर्श कुछ भी रहे हों। आमतौर पर यह स्वीकार कर लिया गया कि आर्थिक प्रगति के लिए जर्मन राष्ट्र-राज्य का निर्माण अनिवार्य था। जर्मन राष्ट्र-राज्य का निर्माण ऊपर से आरोपित क्रांति द्वारा हुआ। बिस्मार्क और प्रशा की सेना द्वारा लड़े गए 1864-1866 और 1870-71 के युद्धों के बाद ही इसका निर्माण हो सका। इटली में राष्ट्रवाद का विचार दांते के इतालवी साहित्य और मेजनी के युवा इटली के उत्साही आदर्शवाद से संबंधित था। बाद में इसमें बुर्जुआ वर्ग की आर्थिक विचारधारा भी शामिल हुई।

1840 के दशक में पत्रकारों और बुद्धिजीवियों ने आर्थिक एकीकरण के लिए एक कार्यक्रम सामने रखा। यह नई विचारधारा नव इतालवी बुर्जुआ वर्ग के हितों के साथ-साथ जर्मन सीमा शुल्क संघ और जोल्वेरियन की सफलता से भी प्रेरित था। 'इतालवी रेलवे की एकीकरण' और इसे पिडमांट और लोमबार्ड रेलवे व्यवस्था से जोड़ने का आस्ट्रिया ने विरोध किया जिसके कारण आर्थिक राष्ट्रवाद को पनपने का मौका मिला। हालांकि इतालवी उद्योगपतियों की कार्यसूची में रेलवे निर्माण, सीमा शुल्क संघ, एक समान मुद्रा और राष्ट्रीय बाजार का निर्माण जैसे कार्य शामिल नहीं थे। मिलान के उद्योगपति पिडमौंट के उद्योगपतियों को अपना प्रतिद्वंद्वी मानते थे और मिलान के उद्योगपतियों ने वस्तुतः बड़े जर्मन बाजार के निर्माण का समर्थन किया था। उद्योगपति इतने कमजोर थे कि बाजारों के विस्तार से उन्हें बहुत फायदा नहीं होने वाला था और इस बात का भी खतरा था कि प्रतियोगिता बढ़ने से उन्हें नुकसान न उठाना पड़े। यहां तक कि वाणिज्यिक हित भी इटली के एकीकरण के समर्थन में नहीं थे। वस्तुतः बाजार के लिए उत्पादन में लगे भूमिपति और किसानों ने हमेशा एकीकरण का समर्थन किया। बोलोगाना में कैवूर, मिंगेटी और तुसकैनी में रिकासोली जैसे समृद्ध भूमिपतियों और उदारवादियों ने इटली के राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इटली में बुर्जुआ वर्ग के कमजोर होने के कारण आर्थिक एकीकरण में भूमिपतियों और शहरी पेशेवरों की भूमिका प्रमुख रही।

16.5.3 राष्ट्र और राष्ट्र-राज्य

आधुनिक राज्य, राष्ट्र और राष्ट्रवाद सभी इस अर्थ में क्षेत्रीय हैं कि वे खास भौगोलिक क्षेत्रों पर आधारित हैं या उस पर दावा करते हैं। 19वीं शताब्दी में यह विचार प्रतिपादित किया गया कि राज्य और राष्ट्र 'राष्ट्र-राज्य में भौगोलिक दृष्टि से समाहित' होने चाहिए। आधुनिक राज्य को अक्सर 'क्षेत्र आधारित राज्य' कहा जाता है क्योंकि इसमें एक स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्र होता है जिसमें उसका अपने सभी नागरिकों पर संप्रभु अधिकार होता है। राष्ट्रवाद विशिष्ट क्षेत्र आधारित विचारधारा है जो आंतरिक रूप से जोड़ती है और बाह्य रूप से विभाजित करती है। एक विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद राष्ट्र के भीतर सामाजिक वर्ग या हैसियत पर आधारित संघर्ष को हतोत्साहित करता है परंतु इसमें विभिन्न लोगों और राष्ट्रों के बीच मतभेद बढ़ते हैं।

मैक्सवेबर और लेनिन जैसे भिन्न विचारकों ने यह माना है कि राष्ट्र और राष्ट्रवाद को "मुख्य रूप से राज्य के राजनैतिक निर्माण" के रूप में देखा जाना चाहिए। राष्ट्रवाद एक विचारधारा है जो राष्ट्र कहे जाने वाले सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से परिभाषित क्षेत्र आधारित समुदायों को राजनैतिक निर्माण से जोड़ता है। एक विचारधारा के रूप में राष्ट्रवाद एक स्वतंत्र राज्य की मांग कर सकता है या पहले से मौजूद राज्य का रूपांतरण कर सकता है या राष्ट्रीय हित में राज्य नीति के लिए राजनैतिक वैधता प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है।

यह पाया गया है कि राष्ट्रवाद तीन तरीकों से आधुनिक राज्य का निर्माण करता है। इंगलैंड और फ्रांस जैसे पुराने राज्यों में राष्ट्रवाद के उदय का संबंध राज्य और नागरिक समाज के बीच के जनतांत्रिक संबंधों के विकास से जुड़ा हुआ है। दूसरे, राष्ट्रवाद सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से बिखरे विविध क्षेत्रों को एकरूप राज्य क्षेत्र में जोड़कर एक आंतरिक एकता पैदा करता है। अन्ततः राष्ट्रवाद एक राजनैतिक समुदाय या राष्ट्र को दूसरे राजनैतिक समुदाय या राष्ट्र से जोड़ता है और यहां तक कि कई मामलों में राष्ट्रवाद की भौगोलिक सीमाएं निर्धारित करता है।

राष्ट्रवाद एकीकरण और विभाजन दोनों प्रकार के आंदोलनों को समर्थन दे सकता है। इटली और जर्मनी में राष्ट्रवाद और राज्य ने एक नया राष्ट्र-राज्य निर्मित किया था। स्कैन्डेनेविया में राष्ट्रवाद ने स्वीडेन से नार्वे को अलग कर दिया था। पोलैंड के मामले में एकीकरण और विभाजन दोनों हुआ जिससे पोलिश राष्ट्र-राज्य का निर्माण हुआ। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय आत्मनिर्धारण के सिद्धांत के अनुसार भाषा, एक निर्मित राष्ट्रीय भाषा, जातीयता या आम संस्कृति और परम्परा के आधार पर नए राष्ट्र-राज्यों का निर्माण हुआ। इन राष्ट्र-राज्यों के उदय से पहले ही ग्रीस, चेकोस्लोवाकिया और आयरलैंड का उदय हो चुका था जिन्होंने बहु-राष्ट्रीय साम्राज्यों से स्वतंत्रता हासिल कर ली थी। इन राष्ट्र-राज्यों का निर्माण क्रमशः औटोमन साम्राज्य, आस्ट्रिया-हंगरी और ब्रिटेन से काटकर हुआ था। मध्य और पूर्वी यूरोप में राष्ट्रवाद की बागडोर निम्न मध्य वर्ग और किसानों ने संभाल ली क्योंकि वहां औद्योगीकरण कम हुआ था और बुर्जुआ वर्ग कमजोर था। औद्योगीकरण के विकास के कारण कामगार वर्ग और समाजवाद का उदय हुआ, अन्तर-साम्राज्यवादी टकराव बढ़ा। इस कारण अब राष्ट्रवाद मात्र फ्रांसीसी क्रांति की रिपब्लिकन विचारधारा नहीं रह गई बल्कि इसका संबंध रूढ़िवादी और दक्षिणपंथी विचारधाराओं से भी हो गया।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर हां या नहीं में दीजिए।

   क) राष्ट्रवाद अनन्तकाल से मौजूद था।

   ख) राष्ट्रवाद के विचार के प्रसार में फ्रांसीसी क्रांति की कोई भूमिका नहीं थी।

   ग) ब्रिटेन और फ्रांस पहले राष्ट्र-राज्य थे।

   घ) राष्ट्रवाद के विकास में भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

2) राष्ट्रवाद का विचार कब विकसित हुआ ? 100 शब्दों में सोदाहरण उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

3) राष्ट्र-राज्यों के विकास में राष्ट्रवाद और आधुनिक राज्यों की भूमिका पर विचार कीजिए। 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

16.6 जनतांत्रिक और राष्ट्रवादी लामबंदी के बीच संबंध

इस भाग में हम विभिन्न प्रमुख आंदोलनों और राष्ट्रवाद के उदय पर विचार करने जा रहे हैं।

16.6.1 उदारवादी जनतंत्र और राष्ट्रवाद

स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा तथा मानव अधिकार फ्रांसीसी क्रांति की प्रमुख विचारधाराएं थीं। ये विचारधाराएं भविष्य में होने वाली सभी जनतांत्रिक और जन आंदोलनों का प्रेरणा स्रोत बनीं। 19वीं शताब्दी के दौरान पूरे यूरोप में सुधारवादियों को जैकोबिन विचारों ने प्रेरित किया। वस्तुतः फ्रांसीसी क्रांति के अनुभव से ही बुर्जुआ क्रांति का आदर्श प्राप्त हुआ था। फ्रांस में आर्थिक विकास के लिए बुर्जुआ क्रांति के महत्व पर हाल के कुछ इतिहासकारों ने प्रश्न चिह्न लगाया है। संशोधनवादियों ने यह माना है कि जनतांत्रिक आंदोलनों और सुधारवादी विचारों को इससे काफी बल मिला था। फ्रांस का जनतांत्रिकरण धीरे-धीरे हुआ था और 1830 तथा 1848 की फ्रांसीसी क्रांतियां और 1871 का पेरिस कम्यून फ्रांसीसी राजनीति और समाज की जनतांत्रिक प्रक्रिया के अंग थे; इसके बावजूद 1792-95 के वर्षों में सुधारवाद के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

1792-95 के दौरान फ्रांसीसी राजनीति के सुधारवादी आंदोलन की शुरुआत सैन्स-कुलोत द्वारा हुई। ये लोग युद्ध, खराब फसल, भोजन की कमी, मूल्य वृद्धि और मुद्रा के ढह जाने के कारण बुरी तरह प्रभावित हुए थे। सैन्स-कुलोत लोग शहर में कार्यरत सक्रिय समूह थे जो युद्ध और आर्थिक संकट से बुरी तरह प्रभावित हुए थे। दुकानदार, कारीगर, मजदूर और बेरोजगार लोगों को सैन्स-कुलोत कहा जाता था जिन्होंने न केवल मूल्य नियंत्रण और राशनिंग का समर्थन किया बल्कि वे जनता की प्रभुसत्ता और प्रत्यक्ष प्रजातंत्र के सिद्धांतों में विश्वास रखते थे। अगस्त 1792 में फ्रांस के आक्रमण और राजा की हत्या के बाद सार्वभौम पुरुष मताधिकार द्वारा एक नई संविधान सभा का चुनाव हुआ। एक बार फ्रांस पर युद्ध के बादल छंटने के बाद 1794 में जैकोबिन समाजों और सैन्य संगठनों के साथ-साथ स्थानीय सरकारी सभाओं पर भी नियंत्रण स्थापित कर लिया गया। सम्पत्ति के समतावादी वितरण, क्रांतिकारी न्याय और जीने के अधिकार जैसे विचारों पर आधारित प्रत्यक्ष प्रजातंत्र का चरण समाप्त हो गया।

1795-1799 के दौरान उदारवादी जनतांत्रिक राज्य की असफलता के बाद फ्रांस पर नेपोलियन के नेतृत्व में सेना का अधिकार हो गया। जनता के बीच मत विभाजन और राज्य के भीतर जनता की भलाई के संबंध में किसी प्रकार की सर्वसम्मति के अभाव के कारण फ्रांस की सेना को राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता मिली। इसके परिणामस्वरूप नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बन गया और उसने 1804 में शाही संविधान की स्थापना की। हालांकि नेपोलियन की तानाशाही ने क्रांति के आदर्शों को छोड़ दिया परंतु यह भी इतना ही सत्य है कि उसकी सैनिक कार्यवाइयों और अभियानों ने यूरोप के राजनैतिक मानचित्र को सरल बना दिया

और विजित लोगों के बीच राष्ट्रवाद और प्रजातंत्र के विचारों को प्रसारित करने में मदद पहुंचाई। वियेना सम्मेलन में न केवल फ्रांस पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की गई बल्कि प्रशा, आस्ट्रिया और रूस जैसी संकीर्णवादी यूरोपीय शक्तियों ने मेटरनिख प्रणाली द्वारा प्रजातांत्रिक और राष्ट्रवादी प्रसार को रोकने का प्रयत्न किया। यूरोपीय सभा में यूरोप में चलने वाले सभी उदारवादी और राष्ट्रवादी आंदोलनों को दबाने का सक्रिय प्रयास किया गया जिसके कारण निरंकुश राजाओं का सिंहासन खतरे में पड़ गया था। 1820 में स्पेन, ग्रीस और इटली में क्रांतियां हुईं। 1830 में फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम और पौलैंड में और भी विकट क्रांतियां हुईं। मध्य वर्ग के सुधारवादी किसान और मजदूरों ने मिलकर क्रांति की और बेल्जियम को आजादी दिलवाई। यूरोप में प्रजातंत्र को दबाने के व्यवस्थित प्रयत्नों के बावजूद उदारवादी विचारों को फैलने से ज्यादा दिन तक रोका न जा सका।

1848 में हुई क्रांतियों ने पूरे यूरोप को अपने चपेट में ले लिया जिससे प्रजातंत्र और राष्ट्रवाद के लिए आंदोलन तेज हो गया। इसके बाद फ्रांस में नेपोलियन III सत्ता में आया, इटली और जर्मनी के एकीकरण में तेजी आई और बहु-राष्ट्रीय आस्ट्रियाई समाज में राष्ट्रवादी विचार को बल मिला। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जनतांत्रीकरण की प्रक्रिया से न केवल क्रांतियों के लिए माहौल तैयार हुआ बल्कि सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन की सतत प्रक्रिया के द्वारा उद्योगों का विकास हुआ और बुर्जुआ वर्ग जैसे नए सामाजिक वर्ग पैदा हुए। आधुनिक राज्य और नौकरशाही का भी विकास हुआ जिसके फलस्वरूप सरकारी भाषाओं का विकास हुआ और जन शिक्षा में बढ़ोत्तरी हुई। यूरोप में प्रेस के उदय से जनतांत्रिक और राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार में मदद मिली। जैसे-जैसे प्रकाशनों का सिलसिला बढ़ा वैसे-वैसे इसके पढ़ने वाले पाठकों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई। जनता राज्य की नीतियों पर नजर रखने लगी। सार्वजनिक संस्थाओं और रोजगार में वद्धि होने से उदारवादी मध्य वर्ग का आकार बढ़ा और विभिन्न वर्गों द्वारा राज्य के खिलाफ राजनैतिक आंदोलन चलाए जाने लगे। 19वीं शताब्दी के दौरान फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर ब्रिटेन में कोई आंदोलन नहीं हुआ। वहां चार्टिस्ट आंदोलन हुआ और 1832 तथा 1867 के सुधारवादी नियमों के द्वारा मताधिकार का क्षेत्र विस्तृत किया गया। ब्रिटेन में हुई औद्योगिक क्रांति ने न केवल निजी पूंजीवादी संग्रहण पर आधारित पूंजीवाद का विकास किया बल्कि ब्रिटिश राज्य के रू-ब-रू नागरिक समाज को एक निर्णायक लाभ की स्थिति प्रदान की। उसके बावजूद ब्रिटिश शासकीय वर्ग और राज्य उभरते बुर्जुआ वर्ग और पुराने कुलीनतंत्र के बीच एक समझौते का प्रतिनिधित्व करते थे। ब्रिटेन के राजनैतिक संभ्रांत वर्ग द्वारा नागरिक साम्राज्य की बदलती प्रकृति के अनुरूप अपने को ढालने की क्षमता या सामाजिक वर्गों के बीच संतुलन को उदारवादी और मार्क्सवादी एक साथ देख रहे थे। कुछ के अनुसार यह एक प्रकार का वर्ग समझौता था जो सफल वाणिज्यिक भूमिपतियों, उभरते उद्योगपतियों और अन्ततः पूंजी और अलक्ष्य वस्तुओं के निर्यात पर आधारित वित्तीय पूंजीपतियों के वर्चस्व को बनाए रखने के लिए अनिवार्य था। केन और हॉपकिन्स ने सामाजिक वर्गों के सफल मोर्चे को व्याख्यायित करने के लिए 'भद्र समूह' की अवधारणा विकसित की जिसने 1688 के बाद 20वीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटेन पर शासन किया। केन और हॉपकिन्स ने ब्रिटेन के आकार और संसाधनों को देखते हुए वहां के आर्थिक विकास को संतोषजनक माना जबकि दूसरों ने यह कहा कि ब्रिटेन विक्टोरिया युग के अन्त में असफल रहा और 19वीं शताब्दी के अंत की दूसरी औद्योगिक क्रांति का सफलतापूर्वक निर्वाह न कर सका। उनका मानना था कि बुर्जुआ क्रांति के अभाव और ब्रिटिश राज्य सत्ता पर औद्योगिक पूंजीपतियों का प्रभाव न होने के कारण ब्रिटिश अर्थव्यवस्था की प्रगति अवरूद्ध हुई। बीसवीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के संकट का विश्लेषण करते हुए पेरी एन्डरसन ने ब्रिटिश राज्य के पुरानेपन और सामाजिक वर्गों के बीच के संबंधों के इसके प्रबंधन का हवाला दिया। ब्रिटेन की आर्थिक प्रगति पर इस सामाजिक और वर्ग संघर्ष के कौशलपूर्ण ब्रिटिश प्रबंधन का जो भी प्रभाव पड़ा हो, इससे मताधिकार का विस्तार हुआ और इसके फलस्वरूप ब्रिटिश प्रजातंत्र ने आगे की ओर कदम बढ़ाया इसके फलस्वरूप ब्रिटिश समाज में मजदूर वर्ग और साधारण ब्रिटिश नागरिकों को सफलतापूर्वक समाहित किया गया। यहां तक कि ब्रिटिश मजूदर आंदोलन ने भी ब्रिटिश राष्ट्र के आदर्शों, राजतंत्र और ब्रिटिश साम्राज्य को संरक्षित रखने के मूल्य को स्वीकार किया।

16.6.2 राष्ट्रवादी लामबंदी और जनतांत्रीकरण को प्रभावित करने वाले कारक

19वीं शताब्दी के चरण जैसे-जैसे आगे बढ़े वैसे-वैसे यूरोपीय सभा और पवित्र संघ की प्रतिक्रियावादी भूमिका के बावजूद प्रजातंत्र के विचार को लोकप्रियता प्राप्त हुई। इसी के साथ-साथ ब्रिटेन और फ्रांस में पूंजीवाद का विकास हुआ था। ब्रिटेन और फ्रांस में पूंजीवाद की आई पहली लहर की तुलना जर्मनी और इटली में देर से हुए औद्योगीकरण या दूसरे लहर की अक्सर तुलना की जाती है। इस मुद्दे पर विचार करने के पूर्व आइए, पहले हम आर्थिक विकास, आधुनिकीकरण और जनतांत्रीकरण के सामान्य परिणामों का अवलोकन करें। अर्थव्यवस्था के विकास के साथ-साथ नए सामाजिक वर्गों का विकास हुआ। इन सामाजिक वर्गों ने, और खासतौर पर मजदूर वर्ग के उदय से, 19वीं शताब्दी के दौरान आधुनिक राज्यों और उदारवादी बुर्जुआ वर्ग के सामने नई समस्याएं पैदा हुईं। ब्रिटेन में 1832 के सुधार अधिनियम के बाद उदारवादी मध्यवर्ग और मजदूर वर्ग के संघर्ष के रास्ते अलग-अलग हो गए। चुनाव पर आधारित प्रजातंत्र में समृद्ध मध्य वर्ग को शामिल किया गया और 19वीं शताब्दी के मध्य तक कई यूरोपीय राज्यों में यह व्यवस्था कायम हो गई। 19वीं शताब्दी के अंत में जर्मनी में सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के उदय ने जर्मन राजनीति और समाज में संकीर्णतावादियों की तुलना में उदारवादी बुर्जुआ वर्ग की स्थिति को प्रभावित किया। बड़े जनाधार वाले समाजवादी दल भी सफलतापूर्वक जर्मन समाज को जनतांत्रिक नहीं बना सके; हालांकि प्रथम विश्व युद्ध के पहले जर्मनी में विद्यमान संकीर्णतावाद को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया।

राष्ट्रीयता और भाषा

राज्यों के आधुनिकीकरण के साथ-साथ केंद्रीय प्रशासन का विकास हुआ और तर्कसंगत-वैधानिक सिद्धांतों के आधार पर बृहद नौकरशाही की स्थापना की गई। इस प्रक्रिया के साथ-साथ राष्ट्रीय भाषा, प्रशासन की भाषा और स्थानीय संप्रेषण की भाषा का विकास हुआ। किसी भी बोली या भाषा को सरकारी संप्रेषण का माध्यम बनाने के बाद इसके प्रचार-प्रसार के लिए जनता या राज्य का समर्थन प्राप्त किया गया। राज्य भाषा के प्रचार प्रसार के लिए स्कूलों में भाषाएं पढ़ाई जाने लगीं। आधुनिक विश्वविद्यालय, विधि और पत्रकारिता के विकास के कारण पेशेवर मध्य वर्ग और आधुनिक राज्य अधिकारीतंत्र का विकास हुआ। माध्यमिक स्कूल प्रणाली के विस्तार और स्कूलों में सरकारी या राष्ट्रभाषा को पढ़ाए जाने से आस्ट्रिया-हंगरी और पूर्वी यूरोप के बहुजातीय राज्यों में प्रतिद्वंद्वी जातीय भाषाई समूह के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसके पहले भाषा लोगों में दरार नहीं पैदा करती थी क्योंकि साक्षरता स्तर काफी नीचे था, जनता और संभ्रांत वर्ग में नियमित संवाद नहीं होता था और राज्य में किसी भी प्रकार की कोई प्रातिनिधिक सरकार नहीं होती थी। 'विद्यालय और कार्यालय' में पढ़ाई और प्रयुक्त की जाने वाली भाषा को लेकर सबसे पहले 19वीं शताब्दी में विवाद उठा और भाषाई राष्ट्रवाद का संबंध आधुनिक अधिकारीतंत्र के उदय और निम्न बुर्जुआ वर्ग की नौकरी प्राप्त करने की आकांक्षाओं और सांस्कृतिक प्रभाव से था।

1840 के दशक में राइन सीमा को लेकर जर्मनों और फ्रांसीसियों के बीच तथा स्लेसविग-होल्सटिंन को लेकर डेन्स और जर्मनों के बीच हुए मतभेद से भाषा अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में एक प्रमुख मुद्दा बन गई। 19वीं शताब्दी के अंत में विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच हुए मनमुटावों में भाषा की प्रमुख भूमिका रही है। आधुनिक राज्य और इसकी प्रशासनिक इकाइयों के कारण आम जनता के बीच भाषाई पहचान का भाव तीव्र हो गया। 1860 के दशक के बाद सांख्यिकीविदों और जनसंख्या संबंधी आंकड़ा इकट्ठा करने वालों ने भाषा संबंधी आंकड़े भी इकट्ठे किए। अंतरराष्ट्रीय सांख्यिकी सम्मेलन या हैब्सबर्ग साम्राज्य के सांख्यिकीविदों द्वारा भाषा संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श करने का भाषाई राष्ट्रवाद के विकास पर कोई खास असर नहीं पड़ा। भाषा परिवर्तन की अवस्था में थी और जन भाषा का चुनाव कई बातों पर निर्भर करता था जैसे राज्य और स्कूल की भाषा, मातृभाषा, परिवार की भाषा आदि। हाब्सबॉम के अनुसार "भाषा के आंकड़ों का संकलन करने से पहली बार सभी को अपनी राष्ट्रीयता का ही नहीं बल्कि भाषाई राष्ट्रीयता का भी चुनाव करना पड़ा।"

19वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन और फ्रांस जैसे पुराने राज्यों में राज्य आधारित देशभक्ति ने राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया। जनता के नागरिक में बदलने की प्रक्रिया के कारण कई राज्यों में राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रवाद की भावना को बल मिला। चाहे ब्रिटेन जैसा उदारवादी पूंजीवादी राज्य हो या जर्मनी जैसा बाद में औद्योगीकृत हुआ देश। 19वीं शताब्दी के अंत में सभी देशों में राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय अतिराष्ट्रवाद के विकास में प्राकृतिक-सांस्कृतिक मतभेदों के संबंध में जनता की भावनाओं, राजनैतिक और राष्ट्रीय विशेषताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूरोप में कामगार वर्गों की देशभक्ति का यह मतलब नहीं था कि वे सभी राष्ट्र-राज्य के प्रति निष्ठावान थे। इसका सबसे अच्छा उदाहरण द्वितीय अन्तरराष्ट्रीय (सेकेन्ड इन्टरनेशनल) के समाजवादी दल और कामगार वर्ग हैं जिन्होंने आरंभ से ही साम्राज्यवादी युद्ध के विचार की आलोचना संबंधी राजनैतिक प्रस्ताव पारित कर रखा था और समाजवादी दलों के संघर्ष के अन्तरराष्ट्रीय चरित्र पर बल दिया था। परंतु जैसे ही प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई वैसे ही वे अपने राष्ट्रीय हितों और राष्ट्र का समर्थन करने लगे। शासकीय वर्गों और साम्राज्यवादी गुटों का विरोध करने के बावजूद समाजवादी दल, समाज और मजदूर 1914-18 के बड़े युद्ध में देशभक्ति से ओत-प्रोत होकर शामिल हो गए। लेनिन को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ जब उसने पढ़ा कि यूरोप का सबसे बड़ा समाजवादी दल जर्मन सोशल डेमोक्रेट, जिसका जर्मनी के एक तिहाई मत पर नियंत्रण था, ने युद्ध की घोषणा होते ही इसका पूर्ण रूप से समर्थन कर दिया। बाद के पर्यवेक्षकों का मानना है कि समाजवादी और मार्क्सवादी कामगार वर्गों, समाजवाद के प्रचारकों और साम्राज्यवादी जनतांत्रिक दलों से जुड़े लोगों की देशभक्ति और राष्ट्रवाद की शक्ति के सामर्थ्य को ठीक से पहचान नहीं पाए।

राष्ट्रवाद, साम्राज्य और शाही प्रतिद्वंद्विता

मताधिकार का बढ़ता क्षेत्र और ब्रिटेन जैसे उदारवादी राज्यों के प्रयासों, जर्मनी जैसे आधुनिकीकृत राज्यों या रूस में जार शासन जैसे निरंकुश शासकों द्वारा अपने को बचाने के लिए वैधता और जन समर्थन प्राप्त करने की रणनीतियों के कारण देशभक्ति का उदय हुआ। समुद्रपारीय विस्तार से राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय पहचान को प्रोत्साहन मिला। इसके अलावा ब्रिटेन, फ्रांस और यहां तक कि हौलैंड और स्पेन जैसे देशों के साम्राज्यवादी विस्तार के कारण उन्हें एक भौतिक और मनोवैज्ञानिक सुख प्राप्त हुआ। इससे भी राष्ट्रीय गौरव की भावना बढ़ी। ब्रिटेन में राष्ट्रीय पहचान की भावना का विकास हुआ। इसका कारण केवल अंग्रेजों की 'खासियत' और आजाद अंग्रेजों की महान परम्परा से मिली प्रेरणा ही नहीं था बल्कि इसे विश्वव्यापी साम्राज्य ने भी गौरवान्वित किया। 1851 की औद्योगिक प्रदर्शनी में ब्रिटेन की औद्योगिक उपलब्धियों को गौरवान्वित किया गया और रानी विक्टोरिया के राज्यारोहण और 1877 में भारत में शाही दरबार जैसे भव्य समारोहों का आयोजन कर साम्राज्यवादी शान-शौकत का प्रदर्शन किया गया। 1707 में संघ-निर्माण के बाद 18वीं और 19वीं शताब्दी में स्कॉटिश राष्ट्रवाद का उदय हुआ परंतु आर्थिक विकास के कारण स्कॉटलैंड के भीतर क्षेत्रों और सामाजिक वर्गों के बीच का अंतर गहराता चला गया। स्कॉटिश मजदूर, खेतों में काम करने वाले मजदूर और कर के बोझ से दबे काश्तकार स्कॉटिश भूमिपतियों से संघर्षरत थे और स्कॉटिश राष्ट्रवाद एक कमजोर और प्रभावहीन शक्ति थी। स्कॉटलैंड के लोगों ने साम्राज्य के अधिग्रहण और प्रबंधन में बड़ी भूमिका निभाई थी; ''इन साम्राज्यिक उपलब्धियों से उनके आत्म गौरव और पहचान की भावना कमजोर होने की बजाए मजबूत हुई हालांकि इसका फायदा ज्यादातर लंदन को ही मिला।'' हालांकि जैसा कि विक्टर केरनैन का मानना था कि स्कॉटलैंड के लोगों के विपरीत वेल्श के लोगों ने ''सेना या साम्राज्य के प्रति कोई प्रेम प्रदर्शित नहीं किया''।

राज्य की नीतियों के लिए समर्थन और वैधता प्राप्त करने, साम्राज्यिक शोषण और औपनिवेशिक मुनाफे के लिए स्वतः स्फूर्त और राज्य प्रायोजित समर्थन प्राप्त करने के लिए राज्य द्वारा बनाई गई नीतियों ने राष्ट्रीय गौरव की भावना को प्रोत्साहित किया। 19वीं शताब्दी के अंत में (1898-1902) दक्षिण अफ्रीका में बसे लोगों के खिलाफ लड़े बोआर युद्ध में ब्रिटेन के उद्धत राष्ट्रवाद की प्रक्रियाओं में इस प्रकार की राष्ट्रभक्ति देखने को मिलती है। 19वीं शताब्दी के अंत में जैसे-जैसे यूरोपीय शक्तियों के बीच साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता बढ़ी

वैसे-वैसे घरेलू आर्थिक मुश्किलों या वर्ग संघर्षों से लोगों का ध्यान हटाना आसान हो गया। हालांकि अफ्रीका के विभाजन के लिए यूरोपीय शक्तियों को आपस में लड़ना नहीं पड़ा परंतु समुद्रपारीय बाजारों और कच्चे मालों के निवेश के अवसरों के साथ-साथ क्षेत्रीय विस्तार की महत्वाकांक्षा ने भी देश की अधिकांश जनता को राष्ट्र-राज्य की संकल्पना और पहचान के साथ जोड़ दिया। चाहे ब्रिटेन जैसा देश हो, जिसका साम्राज्य पूरी दुनिया में फैला हुआ था; चाहे जर्मनी जैसा देश हो जिसका समुद्र पारीय प्रभाव कम था; सभी देशों को 19वीं शताब्दी के दौरान सैनिक अभियान और सफल व्यापारिक उपलब्धियों से हमेशा समर्थन जुटाने में मदद मिली।

19वीं शताब्दी का राष्ट्रवाद कुछ हद तक ब्रिटेन और जर्मनी की आर्थिक और सैनिक प्रतिद्वंद्विता से भी जुड़ा हुआ था। इन दो शक्तियों के बीच नौसैनिक प्रतिद्वंद्विता तथा जर्मनी और इटली में दक्षिणपंथी सरकारों की ब्रिटेन और फ्रांस के स्तर तक पहुंचने की महत्वाकांक्षा (जिनका पहले ही औद्योगीकरण हो चुका था और जिनके पास बड़े उपनिवेश थे) के कारण भी राष्ट्रवाद की भावना को बल मिला। जर्मनी जैसे देर से औद्योगीकृत हुए देशों की संकीर्ण शासन व्यवस्थाओं ने अपने लिए समर्थन जुटाने के लिए आक्रामक राष्ट्रवाद का उपयोग किया और इससे पूरे यूरोप में राष्ट्रीय भावना का प्रसार हुआ। जर्मन सम्राट विलियम II ने 1905 में मोरक्को के टैन्जियर्स में जो भाषण दिया उससे पूरे फ्रांस में भय की लहर दौड़ गई। इस भय को बढ़ाने में फ्रांसीसी समाचार पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फ्रांस अपने प्रति जर्मनी की शत्रुता से आशंकित था और 1870 में सेडान में हुए फ्रांस-जर्मन युद्ध में फ्रांस की हार की यादें अभी ताजा थीं। इस पृष्ठभूमि में फ्रांस के लोगों में राष्ट्रीय एकता का जन्म हुआ जिसके कारण इस संकट की घड़ी में घरेलू टकरावों को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया। हालांकि फ्रांस में परस्पर विरोधी कई गुट थे और प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत के समय भी वैचारिक और राजनैतिक मतभेद मौजूद थे परंतु पूरा फ्रांस राष्ट्र जर्मनी के खिलाफ युद्ध में एक साथ खड़ा था। राष्ट्रवादियों को फ्रांसीसी महानता को हासिल करने का एक अवसर प्राप्त हो गया। इसी के साथ-साथ कैथोलिकों को अपनी देशभक्ति साबित करने तथा समाजवादियों को फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांतों की रक्षा करने का अवसर प्राप्त हुआ। 1890 से लेकर 1914 तक के समय को आमतौर पर 'सशस्त्र शांति' का युग कहा जाता है। यह शांति प्रतिद्वंद्वी सैनिक और कूटनीतिक संधियों के जरिए कायम की गई थी। उपनिवेश प्राप्त करने और मुनाफा कमाने तथा औद्योगिक सैनिक सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए विभिन्न देशों के बीच इस प्रकार की संधियां हुईं। स्कूल की किताबों और राष्ट्रवादी समाचार पत्रों में प्रमुख राष्ट्रीय घटनाओं की बार-बार याद दिलाई गई, कूटनीतिक सैनिक प्रतिद्वंद्विता के प्रति प्रेस और जनता दोनों की प्रतिक्रियाएं सामने आई जिसके कारण 19वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में राष्ट्र-राज्य के निर्माण को स्वतः स्फूर्त और राज्य प्रायोजित समर्थन प्राप्त हुआ।

16.6.3 19वीं शताब्दी के अंत में राष्ट्रवाद का जातीय-भाषाई आधार

19वीं शताब्दी के अंत तक आधुनिकीकरण और एकरूपरीकरण की प्रक्रिया के कारण पुराने राज्यों और उन बड़े राज्यों में, जहां उस समय तक एकीकरण हो चुका था, राष्ट्रवाद की भावना का उदय हुआ। एकल राष्ट्रवाद के विचार के कारण अक्सर जातीयता या भाषा के आधार पर विभिन्न समूहों द्वारा राष्ट्रवाद के समानांतर एक प्रतिराष्ट्रवाद की शुरुआत कर दी जाती थी। इसका कारण यह था कि वे राष्ट्रवादी एकरूपीकरण की प्रक्रिया के कारण अपने को शोषित और अलग-थलग महसूस करते थे। 1880-1914 के बीच राष्ट्रवाद 'दहलीज सिद्धांत' से बंधा नहीं था जिसने पहले राष्ट्र-राज्यों की मांग को सीमित कर दिया था। जनता के बीच से कोई भी यदि राष्ट्र होने का दावा करे तो वह राष्ट्रीय आत्म निर्धारण के अधिकार का दावा कर सकता था। इन 'गैर-राज्य' राष्ट्रों में राष्ट्रवाद को परिभाषित करने का एक मात्र निर्णायक आधार जातीय और भाषाई होता था। हॉब्सबॉम के अनुसार राष्ट्रों को परिभाषित करने में जातीय भाषाई आधार ने जो भूमिका निभाई उसका समुचित उल्लेख राष्ट्रवाद की पुस्तकों में नहीं हुआ है। हालांकि 1780 के दशक से लेकर 1840 के दशक में यूरोप में भाषाई और सांस्कृतिक पुनरुत्थान आंदोलनों का विकास हुआ परंतु आंदोलनकारियों ने ही राष्ट्रीय आंदोलन के दूसरे चरण में एक राष्ट्रीय विचार का निर्माण किया। रॉक के अनुसार तीसरे चरण में आकर ही 19वीं शताब्दी के अंत में यूरोपीय राष्ट्रवादी आंदोलनों में जन समर्थित राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

इस अवधि में तीव्र परिवर्तन, आर्थिक संकट और लोगों के बड़े पैमाने पर देशांतरण के कारण वास्तविक और कल्पित समुदाय राष्ट्रत्व और राष्ट्रीय आत्म निर्धारण के दावे करने लगे। आधुनिकीकरण की तीव्रता के कारण परम्परागत समूह खतरा महसूस करने लगा। पत्रकार, स्कूल शिक्षक और छोटे अधिकारी जैसे शिक्षित मध्यवर्ग जिनकी आय मामूली थी, ने भाषाई राष्ट्रवाद का मार्ग प्रशस्त किया। देशांतरण के कारण विभिन्न समूहों के बीच टकराव और झगड़े हुए क्योंकि ये विभिन्न समूह एक साथ रहने के आदी नहीं थे। राष्ट्रवादी बुर्जुआ वर्ग ने नए जातीय भाषाई राष्ट्रवाद के साथ-साथ पुराने राष्ट्र-राज्यों में अंधराष्ट्रवाद और दक्षिणपंथी आंदोलनों के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। परम्परागत विचारों से अलग हॉब्सबॉम का मानना है कि समाजवाद, राष्ट्रवाद और धर्म को जनता से प्राप्त समर्थन को व्यवहारतः अलग करना बड़ा मुश्किल है क्योंकि "राष्ट्रवाद के साथ-साथ उनकी निष्ठाएं और जुड़ाव कई स्तरों पर होता है" इन जन आंदोलनों के द्वारा कुछ ऐसी आकांक्षाएं व्यक्त की जा सकती थीं जिन्हें परम्परागत रूप से असंगत माना जाता था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जन आधारित राष्ट्रीय आंदोलनों में वर्ग आधारित अपील की जा रही थी। हालांकि हॉब्सबाम ने युद्ध के बाद के यूरोप में राष्ट्रवाद के मूल्यांकन के लिए 1917 के परिदृश्य को क्रांतिकारी या मुख्यतः वर्ग आधारित आंदोलनों के द्वारा सामाजिक रूपातंरण को जरूरत से ज्यादा महत्व दिया है। विलसन के राष्ट्रीय आत्म निर्धारण के सिद्धांत के समर्थन के आधार पर पूर्वी यूरोप की शोषित राष्ट्रीयताएं स्वतंत्र राज्य नहीं बना सकीं। परंतु इस बात पर भी जरूरत से ज्यादा बल नहीं दिया जा सकता कि काफी लोगों ने सामाजिक क्रांति और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के सपने देखे थे। युद्धरत राज्यों के पतन के बाद छोटी-मोटी अल्पजीवी और अलग-थलग क्रांतियां हुईं और इससे फासीवादी और दक्षिणपंथी आंदोलनों की शुरुआत हुई। फिर भी क्रांतिकारी आंदोलनों और सामाजिक रूपांतरण की इच्छा के संबंध के बारे में विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता है।

16.6.4 राष्ट्रवादी आंदोलन और जनतंत्र

एक विचार के रूप में राष्ट्र और राष्ट्रवाद का संबंध जनता की सम्प्रभुता और जनतांत्रिक विचारों से जोड़ा जाता है। 19वीं शताब्दी की राजनीति को जनतांत्रिक विचारों से जोड़ने में रूसो की आम जनता की इच्छा, मनुष्यों के अधिकारों, सार्वभौम वयस्क पुरुष मताधिकार के आधार पर सरकारों के चुनाव के अधिकार से जुड़ी अवधारणा का विशेष महत्व है। हालांकि 19वीं शताब्दी में राष्ट्रीय आंदोलनों पर फ्रांसीसी आंदोलन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा परंतु 19वीं शताब्दी के अंत में राष्ट्रवादी राजनीति में अनुदार या दक्षिणपंथी शासन व्यवस्थाओं का उदय हुआ। नियमित चुनाव पर आधारित जनता की बढ़ती भागीदारी के बावजूद राष्ट्रवादी राजनीति में दक्षिणपंथी झुकाव बढ़ा। जनता, खासकर मजदूर वर्ग तथा वामपंथी या समाजवादी दलों की बढ़ती भागीदारी के भय से ही दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद का उदय हुआ। उदारवादी बुद्धिजीवियों और मध्य वर्ग ने, जिन्होंने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गणतंत्रीय या उदारवादी राष्ट्रवाद का समर्थन किया था, 1848 की क्रांतियों की विफलता के बाद संकीर्णवादी भूमिपतियों और राजतंत्रीय राज्यों से समझौता कर लिया। सबसे पहले उदारवादियों ने ही राष्ट्रीय एकता और बाद में मजदूर वर्गों और समाजवादी दलों की राजनीति कर समझौता किया। हालांकि सामाजिक साम्राज्यवाद और सामाजिक डार्विनवाद को अपना समर्थन न देने के बावजूद मजदूर वर्ग और यहां तक कि समाजवादी समर्थक भी इन प्रभावों से बच नहीं सके।

जनतांत्रिक और लोकप्रिय आंदोलनों और राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय आंदोलनों का संबंध हमेशा से जटिल रहा है। लिंडा कौले ने बताया है कि 18वीं शताब्दी के अंत में ब्रिटेन में आम आदमी क्रांतिकारी और नेपोलियन युग के फ्रांस के खिलाफ संघर्ष करने के लिए राष्ट्रीय संसाधनों और मानव शक्तियों के राष्ट्रीय लामबंदी के पक्ष में था परंतु शासक वर्ग और ब्रिटिश राज्य जनता की इस शक्ति का उपयोग करने में हिचक रहा था क्योंकि इससे उनका वर्चस्व खतरे में पड़ सकता था। दूसरी ओर वेंडी और ब्रिटेनी में फ्रांसीसी क्रांति का विरोध किया गया जो पेरिस से दिए गए आदेशों और सेना के अनिवार्य भर्ती के आदेशों का स्पष्ट उल्लंघन था। इसने न केवल स्थानीय कुलीनतंत्र और पुजारियों को प्रोत्साहित किया बल्कि फ्रांस के गांवों में भी इसे काफी समर्थन मिला। फ्रांसीसी क्रांति के विचारों को सार्वभौम सम्मान नहीं प्राप्त था और क्रांतिकारी फ्रांस की सेना और खासतौर पर नेपोलियन की सेनाओं को पलायन का सामना करना पड़ा। हालांकि मेजिनी ने जनतांत्रिक आदर्शों को आगे बढ़ाया और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए जनता के युद्ध का आह्वान किया परंतु वह इटली की

उदारवादी जनता को प्रेरित करने में असफल रहा और उसका प्रभाव शहरों तक ही सीमित रहा। हालांकि मेजिनी ने जनयुद्ध की अपनी अवधारणा 1808-13 के स्पेन युद्ध से ग्रहण की थी परंतु वह यह देखना भूल गया कि स्पैनिश राष्ट्रवाद के लिए जनता का दिल जीतने में पुजारियों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। कार्लो पिसाकाने एक नेपोलियन समर्थक था जिसने रोमन रिपब्लिक को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी और जिसका यह मानना था कि इतालवी नेतृत्व जनता को अपने साथ लेकर नहीं चल सका और गैरीबाल्डी एक क्रांतिकारी सेना का निर्माण करने में असफल रहा। 1857 में साप्रि में स्थानीय किसानों ने उसे और छोटी क्रांतिकारी सेना को समूल नष्ट कर दिया। इटली में राजनैतिक एकीकरण के लिए राष्ट्रीय आंदोलन और जनता की भागीदारी का संबंध इतना कमजोर था कि मैसिमो डी एजेग्लियो को यह कहना पड़ा कि 'हमने इटली बना दी है अब हमें इतालवियों का निर्माण करना है'।

16.7 राष्ट्रवाद और सामाजिक वर्गः जर्मनी और ब्रिटेन

1848 की क्रांतियों ने यूरोप में उदारवादी बुर्जुआ वर्ग की कमजोरियों को उजागर कर दिया। इसने जर्मनी के उदारवादियों को प्रशा राज्य के साथ समझौता करने के लिए मजबूर किया और इटली में पिडमौंट-सार्डिनिया का आधिपत्य कायम हुआ। यूरोप में 1848 की क्रांतियों के बाद हैब्सबर्ग साम्राज्य और पूर्वी यूरोप के भीतर राष्ट्रवादी भावनाओं का विकास हुआ, पूरे यूरोप में मजदूर वर्ग और समाजवादी विचारधारा का उदय हुआ। इसके अलावा उदारवादी जनतांत्रिक आंदोलन के मतभेदों के कारण मध्यवर्ग मजदूरों, किसानों और शहरी गरीबों से अलग हो गया। यूरोप में 1848 की क्रांतियों के दौरान निर्धनों और मध्य वर्ग की विशेषताएं और उद्देश्य स्पष्टतः अलग-अलग थे। मध्य वर्ग तीव्र परिवर्तन को स्वीकार करने के बजाए संकीर्णवादी प्रशा या फ्रांस के सम्राट नेपोलियन III का समर्थन करना ज्यादा उचित मानते थे।

जर्मनी में, उदारवादी राष्ट्रवाद के सामंत विरोधी स्वरूप ने कुल्टुरकैम्फ के दौरान पुरोहित विरोधी और समाजवाद विरोधी रुख अपना लिया। ज्ञानोदय तर्कसंगतता के समर्थन करने की दृष्टि से पुरोहित विरोध अंशतः प्रगतिशील था परंतु "बिना पितृभूमि वाले रोमनों के काले झुंड" की आलोचना करते समय उनका प्रतिगामी रुख सामने आता था। 1870-1878 के वर्षों के दौरान बुर्जुआ राष्ट्रवाद में मौजूद पुरोहित विरोधी तत्वों ने सामाजिक जनतांत्रिक दल और 1878 के बाद के आंदोलन का आधार तैयार किया। 1870 के दशक के अंत में पनपने वाला नया दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद वामपंथी उदारवादियों और सोशल डेमोक्रेट्स के खिलाफ था। दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद के इस नए दौर में आर्थिक बोझ से दबे प्रशा के भूमिपति और छोटे उत्पादक सक्रिय रूप से उद्योगपतियों को सहयोग देने लगे और संरक्षणवादी आर्थिक नीतियों के सर्मथक हो गए। 1870 के दशक के आर्थिक संकट में धीमी प्रगति हुई और अन्तरराष्ट्रीय मूल्य में मंदी आई, सामाजिक तनाव तेजी से बढ़ा और पूंजीवाद तथा वर्ग संघर्ष के बारे में मार्क्सवादी सिद्धांत को समर्थन मिला। नए और पुराने मध्य वर्ग (नए मध्य वर्ग में नौकरी पेशा लोग तथा अधिकारी शामिल थे) अपना आर्थिक और सामाजिक मत सुरक्षित रखना चाहते थे और मार्क्सवादी अन्तरराष्ट्रीयतावाद से अपने को दूर रखना चाहते थे। विंक्लर के अनुसार " 1870 के दशक के अंत में राष्ट्रवादी होने का मतलब सामंत विरोधी होना नहीं था बल्कि अन्तरराष्ट्रीय विरोधी होना और शामी विरोधी होना था"। जर्मनी में उदारवाद बहुत मजबूत नहीं था, और हालांकि 19वीं शताब्दी में जर्मनी में अपेक्षाकृत शांत बुर्जुआ क्रांति हुई थी, फिर भी ब्रिटेन और फ्रांस के मुकाबले राजनैतिक प्रजातंत्र की परम्पराएं कमजोर थीं। 19वीं शताब्दी में जर्मनी के जनतांत्रिक आंदोलन की कमजोरियों के कारण निश्चित रूप से दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद का विकास हुआ और समाजवादी प्रजातंत्र की गति धीमी हुई। उदारवादी समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने सम्मानजनक जर्मन विश्व नीति अपनाना एक मात्र महत्वपूर्ण तरीका माना जिसके द्वारा जुनकरों और निरंकुश राज्य की शक्ति कम की जा सकती थी।

समुद्रपारीय सफल विस्तारवादी नीति का समर्थन दक्षिणपंथियों ने किया जिसका आर्थिक फायदा न केवल व्यापारियों और मध्यवर्गीय औपनिवेशिक अधिकारियों को होना था बल्कि औद्योगिक मजदूरों, (निर्यात उद्योगों में काम करने वाले) को भी फायदा होना था। ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी जैसे देशों में मजदूर समृद्ध हुए हों या न हुए हों, पारसमुद्रीय व्यापार और निवेश में भारी मात्रा में वृद्धि हुई हो या न हुई हो परंतु इतना सत्य

है कि आर्थिक समृद्धि और सस्ते औपनिवेशिक तथा समुद्र पारीय उत्पादन के कारण इन साम्राज्यवादी देशों के औद्योगिक मजदूरों और आम जनता के जीवन में सुधार अवश्य आया। हालांकि डेविस और हटेन बैक जैसे आधुनिक विशेषज्ञ यह मानते हैं कि समुद्र पारीय और खासतौर पर औपनिवेशिक निवेश से होने वाली प्राप्ति बहुत ऊंची नहीं थी (खासतौर पर ब्रिटिश विदेशी निवेश के मामले में), समुद्र पार से सस्ते भोजन और कच्चे माल की प्राप्ति से कोई खास फायदा नहीं होता था। समुद्रपारीय विस्तार और निवेश के लिए जनता का समर्थन प्राप्त करने का संबंध अंधराष्ट्रवाद और विचारधारा से नहीं था बल्कि आर्थिक लाभ से भी था। हालांकि पैट्रिक ओ ब्रिएन जैसे हाल के लेखक फिर से कैबेडेनाइट मुक्त व्यापार सिद्धांत का समर्थन करने लगे हैं जिसमें उन्होंने ब्रिटेन के लिए साम्राज्य की आर्थिक अप्रासंगिकता का तर्क दिया है परंतु अभी भी साम्राज्यवादी विस्तार की प्रेरणाओं का सामाजिक वर्गीय विश्लेषण साम्राज्य के विस्तार और आर्थिक विकास का मूल्यांकन करने में काफी उपयोगी है। ब्रिटेन और जर्मनी जैसे औद्योगिक देशों में मजदूरों और शहरी उपभोक्ताओं के जीवन स्तर में सुधार होने से मजदूर आंदोलनों में भी तेजी आई। ब्रिटेन में हुए सुधारवादी मजदूर आंदोलन और बिस्मार्क की जर्मनी में दमन और सामंजस्य की नीति ने प्रजाति साम्राज्य और दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद के खिलाफ मजदूर और वामपंथी प्रतिरोध की चुनौती को कमजोर बना दिया। ब्रिटेन में 1867-1884 में मताधिकार का दायरा विस्तृत किया गया और अधिकांश वयस्क पुरुषों को सुधारवादी संसदीय प्रजातंत्र में शामिल कर लिया गया। मजदूर संघ 1878-1890 के बीच मजदूर संगठनों और समाजवादी राजनैतिक दलों के खिलाफ जर्मनी में बनाए गए दमन कानूनों के साथ-साथ प्रगतिशील कल्याणकारी विधान बनाए गए, 1881 में होहेनजोलेरन सम्राट का 'सामाजिक संदेश' और मजदूरों के लिए सामाजिक बीमा की व्यवस्था की गई। हालांकि दमनकारी और दक्षिणपंथी शासन व्यवस्था के अंतर्गत एस.पी.डी का विकास हुआ परंतु इसकी कमजोरियां केवल इन प्रतिबंधित परिस्थितियों के कारण ही नहीं थी। एस.पी.डी के आलोचकों का कहना है कि हालांकि इस दल की मत संख्या में वृद्धि हुई - (1884 में 5,50,000 से बढ़कर 1898 में 20 लाख और 1913 में लगभग 40 लाख हो गया)। परंतु इस दल की कमजोरी इसकी सामाजिक सीमाओं और सैद्धांतिक विश्वासों में निहित थी। यह दल संसदीय प्रजातंत्र में बंध कर रह गया। इसके नेता और कुछ कार्यकर्ता मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय आय अर्जित करने लगे। संशोधनवाद और आर्थिकवाद से दल के मूल्यों और विचारों को धक्का पहुंचा। इसलिए 1914 के कैसर के युद्ध में एस.पी.डी और इसके समर्थकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी स्वाभाविक थी। इसके अलावा एस.पी.डी की असफलताओं के विश्लेषण से उस एक वैचारिक और राजनैतिक कारक का पता चलता है जिसके कारण जर्मन राजनीति और समाज में उभरी तमाम शक्तिशाली विरोधी ताकतों के बावजूद जर्मन दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद को राजनैतिक आधिपत्य स्थापित करने में सफलता मिली। जर्मन दक्षिणपंथियों ने, उदारवादी मध्यवर्ग, मजदूरों और समाजवाद के विकास को रोकने के लिए भूमिपतियों, उद्योगपतियों और मध्यवर्ग के साथ समझौता किया परंतु इसे जर्मनी के निरंकुश आधुनिकीकरण और राजनैतिक एकीकरण का अपरिहार्य परिणाम नहीं माना जा सकता।

16.8 इतालवी राष्ट्रवाद और जनसंगठन

19वीं शताब्दी के दौरान कई कारणों से जनता और किसानों की भागीदारी सीमित थी। राज्यों के शासक संकीर्णतावादी थे और भूमिपति किसानों को राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए रियायत देने को तैयार नहीं थे। बुद्धिजीवी और क्रांतिकारी गांव और शहर के बीच की खाई को पाटने में असफल रहे थे। एक महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि वहां का संभ्रांत वर्ग किसी भी प्रकार के आमूल परिवर्तन से आशंकित था और समाज पर उनका वर्चस्व था।

कोप्पा ने लिखा है कि 1848 का युद्ध इतालियों के समान एक "वैचारिक युद्ध " था। आस्ट्रिया के खिलाफ इस युद्ध में गैरीबाल्डी के स्वयं सेवकों और मिलान के क्रांतिकारियों ने पिडमौंट, पोप के राज्य, टस्कनी और नेपल्स के सैनिकों के साथ मिलकर युद्ध किया था। क्रांति के भय से और जनमत की शक्ति से मजबूर होकर शासकों ने इसमें भाग लिया था। वेनिस और रोम में लोकतंत्र की असफलता मेजिनी के जनयुद्ध के आदर्श की असफलता का एक और प्रमाण है। 1859-61 में कैवूर का उद्देश्य "राष्ट्रवाद की अपेक्षा देशभक्ति" से

प्रेरित था क्योंकि वह इटली के एकीकरण के प्रति वैचारिक वचनबद्धता की अपेक्षा पिडमौंट को मजबूत बनाने के प्रति ज्यादा निष्ठावान था। गैरीबाल्डी के सफल 'दक्षिणी पहल' से सिसली में क्रांति हो गई और नेपल्स में प्राप्त विजय के बाद उसने कैवूर द्वारा प्रदत्त इतालवी एकीकरण की प्रक्रिया में सहायक की भूमिका स्वीकार कर ली। आंदोलन प्रारंभ करने से पहले ही गैरीबाल्डी ने राजतंत्र के साथ काम करने का मन बना लिया था। इस प्रकार अब इटली को ताकत और जनमत से एकीकृत करना संभव था। जनमत संग्रह में भी यह बात सामने आई थी। दोनों नए इतालवी राज्यों, नेपल्स और सिसली, में केंद्रीकृत सरकारों की स्थापना हुई और जनमत की अवहेलना की गई। 1861 और 1865 के बीच नीपोलिटन प्रांतों में विद्रोहियों के साथ हुए युद्ध से यह पता चलता है कि इटली के दक्षिणी क्षेत्र में इटली के केंद्रीकृत राष्ट्र-राज्य से अलगाव का भाव पनप रहा था। इटली के एकीकरण में जनता की पर्याप्त भागीदारी नहीं हुई। इसके कई प्रमाण उपलब्ध हैं। जिस समय इटली का एकीकरण हुआ उस समय मात्र 2.5 % लोग इतालवी भाषा बोलते थे। एकीकरण के तुरंत बाद दक्षिण क्षेत्र में हो रहे उपद्रव को दबाने के लिए वहां 100,000 सैनिकों को तैनात करना पड़ा। एकीकरण के बाद कैवूर को केंद्रीय इटली में अपने प्रतिनिधियों को जनमत संग्रह करने का आदेश देना पड़ा ताकि यह दिखाया जा सके कि पिडमौंट के साथ मिलने की उनकी सभाओं (निर्णय) को जनता का समर्थन प्राप्त था। फ्रांस के नेपोलियन III और पिडमौंट के कैवूर ने मिलकर षड्यंत्र किया कि जनमत संग्रह रोमाग्ना और डचीज में पिडमौंट के पक्ष में जाएं और नाइस तथा सैवाय में फ्रांस के पक्ष में जाएं।

इटली के एकीकरण के बाद उत्तरी औद्योगिक क्षेत्र, कम विकसित मध्य क्षेत्र और पिछड़े दक्षिण क्षेत्र के बीच का विभाजन तीखा हो गया। दक्षिण इटली अलग-थलग और लगभग औपनिवेशिक क्षेत्र बना रहा। इटली एकीकरण वस्तुतः सैन्य सफलता और अन्तरराष्ट्रीय कूटनीति का परिणाम था। यह किसी जन संघर्ष या जनता के युद्ध का प्रतिफलन नहीं था। इसमें जनता को बस उतनी ही मात्रा और संख्या में शामिल किया गया जितना आजादी और एकीकरण के लिए अनिवार्य था। इटली राज्य के निर्माण के बावजूद राष्ट्र की राजनीति में प्रमुख राजनीतिक दलों का सामाजिक आधार काफी सीमित और इतालवी जनता से संपर्क काफी क्षीण था। फ्रांस और जर्मनी की अपेक्षा इटली में मताधिकार का प्रसार, जन शिक्षा का विस्तार, उद्योगों और शहरों का विकास धीमी गति से हुआ। इसलिए इटली की राजनीति को 'ट्रांसफारमिस्मो' कहा जाता था जिसमें लगातार होने वाले राजनैतिक बदलावों और संयोजन के बावजूद परिवर्तन की प्रक्रिया काफी धीमी थी। ग्राम्सी के शब्दों में, इटली के एकीकरण की प्रक्रिया निश्चेष्ट क्रांति के रूप में सामने आई जिसमें इटली के संभ्रांत वर्ग ने इटली की जनता का समर्थन उसी हद तक प्राप्त किया जितना राष्ट्रीय एकीकरण और आस्ट्रिया से आजादी प्राप्त करने के लिए जरूरी था। इटली में जनता की जनतांत्रिक लामबंदी धीमी होने और सुसंघटित बुद्धिजीवी वर्ग की अनुपस्थिति के कारण वहां अधिक अति सुधारवादी आंदोलनों के विकास में बाधा पड़ी। उद्योगों, मजदूर संगठनों और समाजवाद के विकास के कारण इटली के संकीर्णतावादी राजनीतिज्ञ, भूमिपति और निम्न मध्य वर्ग खतरा महसूस करने लगे। वस्तुतः इटली का आर्थिक विकास और नागरिक समाज तथा जनतांत्रिक मूल्यों की प्रगति की गति इतनी धीमी और अपर्याप्त थी कि प्रथम विश्व युद्ध के संकट ने फासीवाद के पनपने और मुसोलिनी की जीत के लिए माहौल निर्मित कर दिया। इटली के युद्ध में कम महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और बाद में शामिल होने के बावजूद युद्ध के बाद उभरे संकट ने फासीवाद विजय की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। एकीकरण के बाद भी इटली में प्रजातंत्र की दिशा में बहुत धीमी प्रगति हुई और इतालवी राष्ट्रवाद दक्षिण क्षेत्र के इटलीवासियों का दिल जीतने में असफल रहा।

16.9 राष्ट्रीय अस्मिता के विकास के चरण : पूर्वी यूरोप

मिरोस्लाव ह्रोख ने पूर्वी यूरोप के छोटे राज्यों में राष्ट्रवाद का अध्ययन करने के बाद राष्ट्रीय आंदोलनों के विकास के तीन चरणों की अवधारणा सामने रखी। पहले चरण (क) या काल में संस्कृति, साहित्य और लोक साहित्य पर बल होता था; दूसरे चरण (ख) में राष्ट्रीय विचारों का प्रचार किया जाता था। अंतिम चरण में राष्ट्रीय आंदोलनों में बड़े पैमाने पर जनता शामिल होती थी। इस समीकरण में कई समस्याएं हो सकती हैं परंतु पूर्वी यूरोप में राष्ट्रवाद के अध्ययन की शुरुआत यहां से की जा सकती है। पहले और दूसरे चरण को एक साथ रखने से अध्ययन करने में सुविधा होगी।

16.9.1 सांस्कृतिक राष्ट्रवादः चरण क और ख

18वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में कृषकों की सादगी और निश्छलता के संबंध में एक स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण के विकास और लोक साहित्य के गंभीर अध्ययन ने 19वीं शताब्दी के अंत में पूर्वी यूरोप में कई लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन का आधार प्रदान किया। 1780 और 1840 के बीच यूरोप में सांस्कृतिक और भाषाई पुनरुद्धार आंदोलन हुए। इस प्रकार के आंदोलन की शुरुआत कुछ विद्वानों और शासकीय संभ्रांत वर्ग ने की जो भुला दिए गए लोगों या किसानों की राष्ट्रीय परम्परा को संरक्षित और विकसित करना चाहते थे। कुछ विदेशी विद्वानों और संभ्रांतों ने भी इस दिशा में मदद की। हालांकि यह माना जाता है कि इस आरंभिक चरण में भाषा आधारित सांस्कृतिक पुनरूद्धार का लक्ष्य पुरानी बोली और संस्कृति को बचाने की अपेक्षा एक 'राष्ट्रीय' भाषा बनाने का सायास प्रयत्न थी। सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों ने कई बोलियों में से एक बोली को चुनकर उसे राष्ट्रीय भाषा बना लिया; व्याकरण के मानकीकरण और शब्दावली निर्माण पर अपेक्षाकृत कम जोर दिया गया। बुल्गेरिया का साहित्य पश्चिमी बुल्गेरिया बोली पर; यूक्रेन का साहित्य दक्षिण-पूर्वी बोली पर; लिथुआनिया का साहित्य यहीं की दो में से एक बोली पर और लैटविया का साहित्य तीन बोली में से एक बोली पर आधारित था। हंगरी में 16वीं शताब्दी से ही साहित्य रचा जा रहा था। अन्य पूर्वी यूरोपीय भाषाओं का साहित्य विकास या निर्माण 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दियों में हुआ।

हालांकि क्रोश तीन बोलियां बोलते थे परंतु इल्लिरियानिज्म के क्रोश प्रस्ताव जुडेविक गज (1809-72) ने 1838 में स्लोकेवियाइ भाषा अपना ली क्योंकि यह सर्बों की प्रमुख बोली थी। दक्षिणी सर्बों को एकीकृत करने का सायास प्रयत्न किया गया। हालांकि सर्बो-क्रोश एक साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुई परंतु कैथोलिक क्रोश रोमन लिपि का इस्तेमाल करते थे जबकि रूढ़िवादी सर्ब क्रिलिप लिपि का उपयोग करते थे। हालांकि जहां तक स्लोवाक का संबंध है 1790 के आसपास स्लोवाक साहित्य के निर्माण के लिए एक बोली को चुना गया और बाद में कुछ दशकों के बाद उसे छोड़ कर दूसरी बोली को आधार बनाना पड़ा। पूर्वी यूरोप, खासकर दक्षिण पूर्वी यूरोप में, यूरोप के अन्य भागों, खासकर पश्चिमी यूरोप, की तुलना में जातीय और भाषाई विविधता ज्यादा थी और विशिष्ट भाषाई सांस्कृतिक अस्मिता की जागरूकता बाद में आई। माग्यारों की संभवतः एक विशिष्ट जातीय समूह के रूप में 13वीं शताब्दी में ही अपनी भाषा थी। वस्तुतः केवल माग्यार ही नहीं बल्कि चेक और पोल ने भी जातीयता या भाषा पर आधारित विशिष्ट पहचान बनाई थी परंतु राष्ट्र संबंधी उनकी धारणा में किसान और आम आदमी शामिल नहीं थे।

चेक राष्ट्रवाद

देसी पुरोहितों को बाहर से आकर बसने वाले जर्मन पुरोहितों से यह खतरा महसूस होने लगा कि वे ऊंचे पदों के लिए उनके प्रतिस्पर्धी बन जाएंगे। इसी भावना से आम चेक राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ। जर्मन उपनिवेशवादी 12वीं शताब्दी में बोहेमिया आए और वहां वे खनन और हस्तशिल्प उत्पादन में सफलतापूर्वक काम करने लगे। जर्मन विदेशियों और अपने बीच अंतर स्पष्ट करने के लिए चेक लोगों ने अपनी भाषा पर बल दिया। मजबूत राज्य होने और अपनी भाषा से जुड़ाव होने के कारण चेक लोगों में मध्ययुग में ही आम पहचान की भावना आ गई थी। हसिट युग के दौरान भाषा, उत्पत्ति और विश्वास ने चेक राष्ट्र का निर्माण किया। 18वीं और 19वीं शताब्दियों में चेकों का अपना स्वतंत्र राज्य नहीं था। परिणामस्वरूप कुलीन वर्ग के लोग जर्मन, स्पैनिश और फ्रेंच तथा शहरी लोग जर्मन बोलते थे। केवल किसान और शहर में रहने वाले गरीब लोग ही चेक भाषा बोलते थे। पूंजीवाद के विकास और चेक मजदूरों के गांव से शहर की ओर प्रयाण के कारण आधुनिक चेक राष्ट्रवाद का आधार तैयार हुआ। 18वीं और 19वीं शताब्दी के अंत में किरानियों, हस्तशिल्पियों और सेवकों के विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त पुत्रों से निर्मित बुद्धिजीवी वर्ग ने चेक भाषा और साहित्य के पुनरूद्धार का मामला उठाया। 1780 के दशक में शिल्पियों और मजदूरों ने भी चेक भाषा और रंगमंच को संरक्षण प्रदान किया। उभरते चेक बुद्धिजीवियों का उद्देश्य था "चेक भूमि में जर्मन राष्ट्र के बराबर आधुनिक चेक राष्ट्र के लिए समान अधिकार प्राप्त करना।" 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुख्य रूप से छोटे शहरों के शिल्पियों के परिवारों से आए चेक बुद्धिजीवियों ने स्कूलों में शिक्षा की भाषा के रूप में चेक भाषा को बढ़ावा दिया। अखबारों, रंगमंचों और सार्वजनिक बहसों में चेक पक्ष को सामने रखा गया और इस
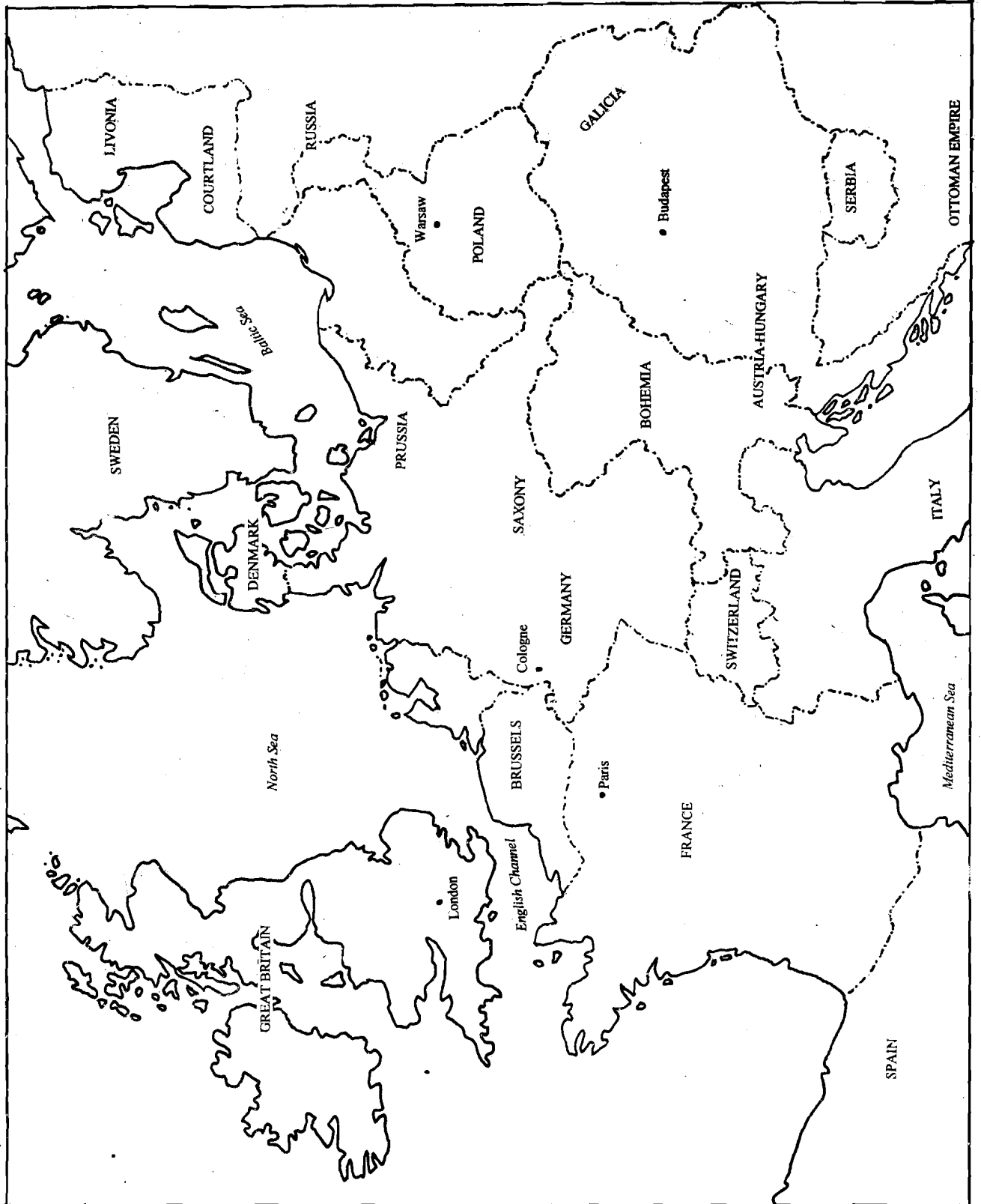
मानचित्र 1 : 19वीं शताब्दी में यूरोप

स्लाव बंधुत्व के साथ जोड़ा गया। 19वीं शताब्दी के मध्य में बोहेमिया और मोराविया में 70% चेक रहते थे। उनके पास कोई राजनैतिक अधिकार नहीं थे और सारे राजनैतिक अधिकार जर्मनों के पास थे। जर्मनी की आंतरिक परिस्थितियों पर चेक बुद्धिजीवियों ने खुलकर सार्वजनिक रूप से बहस की। इसके परिणामस्वरूप चेक बुद्धिजीवियों ने आस्ट्रिया ढांचे के अंतर्गत ही चेक भूमि पर जर्मनों से समानता की मांग की। आस्ट्रिया में स्लाव-पोल, सर्ब, स्लोवाक, क्रोश आदि लोगों के साथ सुरक्षित रहना अधिक संभव था और जार तानाशाही के निरंकुश शासन या अधिक सजातीयतावादी जर्मन साम्राज्य की अपेक्षा यहां चेक लोगों को अपने अधिकार प्राप्त करने की अधिक संभावना थी। एल्ब स्लावों के जर्मनीकरण का चेक लोगों पर विशेष प्रभाव पड़ा और इसी कारण वे जर्मनी के साथ कोई राजनैतिक संघ नहीं बनाना चाहते थे। इन कारकों के कारण 1840 के दशक में आस्ट्रोस्लाववाद की राजनैतिक अवधारणा सामने आई। इस सिद्धांत के अनुसार आस्ट्रियाई निरंकुश राज्य को "राष्ट्रों के संघीय राज्य" में बदला जाना था जहां सभी लोगों को "समान अधिकार" प्राप्त हो।

हंगेरियाई राष्ट्रवाद

हंगरी में भी 18वीं शताब्दी के अंत में अन्य जातीय समूहों के साथ राष्ट्रीय जागरूकता आई। नाइदर हाउजर ने राष्ट्रीय आंदोलनों को दो चरणों — सांस्कृतिक और राजनैतिक — में विभक्त किया है। सांस्कृतिक राष्ट्रवादी चरण के दौरान कई बोलियों के बीच से राष्ट्रीय भाषा का निर्माण किया गया और एक ऐतिहासिक चेतना का संचार हुआ। राजनैतिक चरण में स्थानीय स्वायत्ता की मांग हुई और प्रशासन में राष्ट्रभाषा के प्रयोग से अंततः राष्ट्र-राज्य का निर्माण हुआ। हंगरी में अलग-अलग प्रकार की जातीयताएं मौजूद थीं – स्लाव जनजातियों के बीच रह रहे आक्रमणकारी हंगेरियाई जनजातियों, बाहर से आकर बसनेवाले जर्मन, तुर्की जातीय समुदाय, ट्रांसिलवेनिया में बसे व्लाख; इससे हंगरी में जातीयताओं की संख्या और भी बढ़ गयी। 1541 से लेकर 17वीं शताब्दी तक हंगरी के मध्य भाग में औटोमन साम्राज्य के आधिपत्य ने जातीय संतुलन को प्रभावित किया। दक्षिण हंगरी में जर्मनों को बसाने की हैब्सबर्ग नीति के कारण भी ऐसे ही जातीय संतुलन प्रभावित हुआ। हंगरी के संभ्रांत सामंत वर्ग में माग्यरों और क्रोशों का वर्चस्व था और डायटों में भी उनका ही वर्चस्व था, अतः उनका राजनैतिक बोलबाला भी था। केवल ट्रांसिल्वेनिया का अपना डायट था।

16.9.2 राष्ट्रवादी विकासों का प्रचार और राष्ट्रवाद

हॉब्सबाम प्रमाण देकर यह दिखाते हैं कि विदेशी आक्रमणकारियों के खिलाफ राष्ट्रीय प्रतिरक्षा संबंधी स्वायत्त जन आंदोलनों की विचारधाराएं राष्ट्रीय होने की अपेक्षा "सामाजिक और धार्मिक थीं"। 15वीं और 16वीं शताब्दी में यूरोप के किसानों ने यह महसूस किया कि उनके सामंत उन्हें धोखा दे रहे हैं तब उन्होंने आक्रमणकारी तुर्कों के खिलाफ अपनी आस्था का सहारा लेकर विरोध करने का निश्चय किया। हुसांइट बोहेमिया में या ईसाई राज्यों के सैनिक सीमांतों पर सशस्त्र किसान समुदायों के बीच एक लोकप्रिय राष्ट्रीय देशभक्ति का उदय हो सकता था यदि इन्हें आक्रमणकारियों से लड़ाई करने की पूरी छूट दी जाती। कोसैक लोग इसके उदाहरण हैं। सर्ब लोगों में प्रारंभिक-राष्ट्रीय भावना मौजूद थी क्योंकि उनके मन में अभी भी पुराने सर्ब राज्य की याद ताजा थी जिसे तुर्कों ने नष्ट कर दिया था। सर्बियाई चर्च ने भी देशभक्ति को किसी न किसी रूप में जिन्दा रखा था और सर्ब राजाओं को धर्म ग्रंथ का पाठ कराया था। हालांकि कोसैक किसी एक जातीय समुदाय के लोग नहीं थे फिर भी उनकी आस्थाएं एक जैसी थीं। 17वीं शताब्दी में रूस में कैथोलिक **पोलैंड** और मुसलमान तुर्कों के दबाव में धर्म और धार्मिक प्रतीक लोकप्रिय राष्ट्रीय जागरूकता में महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरे। भाषा, संस्कृति और इतिहास की भावना पर आधारित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उदय के बाद राष्ट्रवाद एक विचार के रूप में उभरा और इसने पूर्वी यूरोप की छोटी-छोटी राष्ट्रियताओं को प्रभावित किया।

चेकोस्लोवाकिया

19वीं शताब्दी के अंत में चेक राजनीतिज्ञों ने कोई बृहद राजनैतिक योजना सामने नहीं रखी और उन्हें छोटी रियायतों पर ही संतोष करना पड़ा। चेक भूमि में आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति के बावजूद बुर्जुआ वर्ग के पास चेक राष्ट्रवाद को समर्थन देने का पर्याप्त आधार नहीं था। प्रथम विश्व युद्ध ने यूरोप के अन्य क्षेत्रों के

समान चेक क्षेत्रों में भी राष्ट्रवाद की भावना का संचार किया। युद्धकालीन कठिनाइयों के दौरान शहरों में खलबली मच गई, 1915 के बाद लोग युद्ध भूमि को छोड़कर भागने लगे और 1917 में चेक लेखकों ने एक घोषणा पत्र तैयार किया जिसमें यूरोप के भावी जनतांत्रिक राष्ट्रों का समर्थन किया गया। अक्टूबर 1915 में टॉमस मासरिक ने यूरोप के सभी छोटे राज्यों की आजादी की मांग की और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुए राजनैतिक परिवर्तन के कारण यह सपना सच्चाई में बदलने लगा। 1915 में आजाद चेकोस्लोवाक राज्य की मांग की गई। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान चेक और स्लोवाक सैनिक इकाइयों ने आस्ट्रिया-हंगरी के शत्रुओं के साथ हाथ मिलाया और इस प्रकार विजयी शक्ति समूहों के साथ अपने को जोड़कर अपना दावा प्रस्तुत किया। चेक राष्ट्रवाद के परिणामस्वरूप एक हजार वर्षों के बाद चेक भूमि को स्लोवाकिया के साथ पुनः एकीकृत किया गया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान बड़े राज्यों पर पड़े प्रभाव और राष्ट्रीय आत्म निर्धारण के लिए राष्ट्रपति विलसन के समर्थन के कारण भी चेक और स्लोवाकिया को जोड़ने में मदद मिली।

हंगरी

हंगरी में द्वैध राजतंत्र की स्थापना से हंगेरियाइयों को तो खुशी हुई परंतु इससे अन्य राष्ट्रीयताओं में राष्ट्रीय भावना का जन्म हुआ। हैब्सबर्ग द्वारा 1850 और 1910 के बीच हुए सरकारी जनमत संग्रह के अुनसार 1900 के बाद ही हंगेरियाई बहुमत में आ सके। यहां तक कि 1910 में क्रोएशिया सहित हंगेरियाइयों की संख्या कुल जनसंख्या की 51.5 प्रतिशत थी। 1868 के राष्ट्रीयता अधिनियम के तहत राज्य ने गैर-माग्यारों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करने, बैंक बनाने तथा आर्थिक संगठन कायम करने का अधिकार प्रदान किया । परंतु राष्ट्र-राज्य के विचार के कारण यह मांग की गई कि हंगेरियाई राष्ट्र और इसके दावे सबसे ऊपर रखे जाएं। 1883 में सरकार ने कानून बनाकर हंगेरियाई भाषा को माध्यमिक शिक्षा में अनिवार्य बना दिया। 1907 तक यह प्राथमिक विद्यालय में अनिवार्य नहीं था। हंगेरियाई राजनेताओं ने हंगेरियाई भाषा को राजभाषा बनाकर गैर-मैग्यार लोगों को अपने में समाहित कर लेने की कोशिश की। पीटर हेनाक के अनुसार 1890-1914 के बीच आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के कारण लाखों लोगों को मैग्यारों ने अपने में मिला लिया। 19वीं शताब्दी के मध्य में बुडापेस्ट में जर्मन भाषी और गैर-मैग्यार लोग रहते थे; 20वीं शताब्दी के आंरभ तक यहां हंगेरियाई भाषा बोलने वाले लोगों का वर्चस्व हो गया। वस्तुतः मैग्यारकरण आर्थिक सफलता और सामाजिक गत्यात्मकता के लिए अनिवार्य शर्त हो गई। गैर-मैग्यार जनसंख्या को कम करने के लिए सरकार ने उन लोगों के संयुक्त राज्य अमेरिका जाने को प्रोत्साहित किया। लगभग 30 लाख लोग, जिनमें मुख्य रूप से स्लोवाक और सर्ब शामिल थे, अमेरिका चले गए।

परंतु सरकार विभिन्न राष्ट्रीयताओं की आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित नहीं कर सकी। रोमानियाई स्वामित्व वाले बचत बैंकों की उन्नति को भी यह न रोक सकी। चर्चों ने मातृभाषा में पढ़ाए जाने वाले माध्यमिक विद्यालयों का समर्थन किया। ऊपरी सदन में चर्च धर्माधिकारियों का प्रतिनिधित्व होने से वहां वे अपनी राष्ट्रीयताओं का प्रतिनिधित्व कर सकते थे। सभी चर्चों को 'राष्ट्रीय' माना जाता था। केवल स्लोवाकों और जर्मनों के चर्च अपवाद थे क्योंकि ये राष्ट्रियताएं कैथोलिकवाद और लूथरवाद पर आधारित आस्थाओं में बंटी हुई थी। रूढ़िवादी चर्च ने सर्बों और रोमानियाइयों के बहुमत, यूनिएट चर्च के लिए रूथेनेस और रोमानियाइयों के अल्पमत का समर्थन किया। गैर-मैग्यार लोगों और शासन के विरोधी मैग्यार दलों को राजनैतिक व्यवस्था से अलग रखने के लिए उच्च जनमत संग्रह करवाया। 20वीं शताब्दी के आंरभ तक रोमानियाइयों और स्लोवाकों में से अधिक सक्रिय और नए राजनैतिक संभ्रांत वर्ग का उदय हुआ, आस्ट्रिया-हंगरी के हेब्सबर्ग साम्राज्य के टूटने के बाद चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया, युगोस्लाविया जैसे नए राज्य कायम हुए। युद्ध के बाद एक नई समस्या सामने आई। राष्ट्रीय सीमाओं के ठीक-ठीक निर्धारण में समस्याएं आ रही थीं। हंगरी को काटकर जो तीन पड़ोसी राज्य बनाए गए उसमें तीन लाख मैग्यार अल्पमत में आ गए। 1920 में हुई ट्रियानन की संधि के कारण तीन में से एक मैग्यार को देश से बाहर जाकर रहने को मजबूर होना पड़ा। इसके कारण मैग्यार बहुमत से अल्पमत में आ गए और एक प्रकार से इसने प्रतिगामी भूमिका निभाई। हंगेरियाई शासकीय संभ्रांत वर्ग ने अपनी बड़ी भू सम्पत्तियां, बैंक और कारखाने खो दिए। हंगरी को काट छांट कर एक तिहाई कर दिया गया। इससे लोगों के मन में काफी असंतोष था। हंगेरियाई शासकीय संभ्रांत वर्ग ने लोगों को

लामबंद करने तथा ट्रियानन की संधि को गलत ठहराने के लिए इस असंतोष का उपयोग किया। संकीर्णवादी संभ्रांतों ने इस संधि का उपयोग कर जनता के असंतोष को राष्ट्रवाद की धारा में बहा दिया और अन्ततः हंगरी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान फासीवादी जर्मनी और इटली के गुट में शामिल हो गया।

पोलैंड

18वीं शताब्दी के दौरान पोलैंड के कुलीन वर्ग में पोलिश भाषा और संस्कृति के आधार पर पोलिश पहचान की भावना विकसित हुई। पोलिश कुलीन वर्ग कुल जनसंख्या के 8% थे जो यूरोपीय मानदंड के हिसाब से ज्यादा थे। 18वीं शताब्दी के अंत में किसानों और यहां तक कि नागरिकों को भी राजनैतिक राष्ट्र में शामिल नहीं किया गया। जहां तक किसानों का संबंध है वे पश्चिमी प्रांत में पोलिश बोलते थे। पूर्वी प्रदेश में रूथेनियन बोलते थे और उत्तर पूर्व में लिथुआनियन बोलते थे। 18वीं शताब्दी तक भाषा राष्ट्रीय चेतना का आधार नहीं बन सकी। पोलिश जनता के धार्मिक मतभेदों ने इस युग में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। किसानों में राष्ट्रीय चेतना का विकास नहीं हो सका था। परंतु 18वीं शताब्दी के अंत में पोलिश स्वतंत्रता के लिए हुए इस युद्ध में उन्होंने हिस्सा लिया था। प्रशा, आस्ट्रिया और रूस जैसी तीन बड़ी शक्तियों के तत्वावधान में अलग-अलग समयों पर 19वीं शताब्दी के दौरान कृषि दास प्रथा के उन्मूलन के साथ कृषि दासता का अंत हुआ जिन्होंने 18वीं शताब्दी में पोलैंड को आपस में बांट लिया था। पहले नागरिकों को और बाद में यहूदियों को नागरिक और प्रजातांत्रिक अधिकार देकर राष्ट्रीय चेतना के प्रसार को तीव्र किया गया। इसके लिए आंदोलन चलाए गए और कृषीय सुधार किए गए तथा विभिन्न वर्गों के बीच कानूनी असमानताओं को दूर किया गया।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भाषा और साहित्य पर आधारित बेलोरूसी और यूक्रेनियाई राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ जिसने पोलिश भाषा और साहित्य के वर्चस्व का विरोध किया। बेलोरूसी इलाके के पोलिश लेखकों ने बेलोरूसी में लिखना शुरू किया और एक राष्ट्रीय साहित्य परम्परा के विकास का निर्माण किया।

भाषा का यह अंतर सामाजिक अंतर से जुड़ा हुआ था। पोलिश भाषा कुलीन और बुद्धिजीवी वर्ग से जुड़ी थी जबकि बेलोरूसी और यूक्रेनी भाषा निम्नवर्गीय परम्परा से उभरी थी जो पोलिश राज्य की विरोधी थी। पोलिश उच्च वर्ग की या उच्च वर्ग में शामिल होने की आकांक्षा रखनेवालों की भाषा थी। इसलिए यह माना जाता था कि किसान उच्च सांस्कृतिक भाषा के रूप में इसे स्वीकार कर लेंगे। इसलिए बेलोरूसी, यूक्रेनी, लिथुनियाई भाषा को किसानों की भाषा माना जाता था और इसे निचले दर्जे की भाषा समझा जाता था। 1918 में स्वतंत्र पोलैंड के निर्माण के बाद दमनकारी जर्मन राष्ट्रवाद के प्रतिक्रियास्वरूप पोलिश राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ।

1920 में अस्तित्व में आया पोलिश गणतंत्र उन क्रांतिकारी परिवर्तनों का प्रतिफलन था जिन्होंने सम्पूर्ण मध्य और पूर्वी यूरोप के कई समुदायों में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। नए पोलिश राज्य में एक तिहाई जनता गैर पोलिश थीः 1931 में 16% यूक्रेनी, 10% यहूदी और 6% बेलोरूसी थे। यूक्रेनियाइयों और बेलोरूसियों में दोनों महायुद्धों के बीच के समय में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ हालांकि आत्मसातकरण की प्रक्रिया भी साथ-साथ चल रही थी और कई लोग मध्यवर्ती या आरंभिक राष्ट्रीय चेतना के समुदायों का प्रतिनिधित्व करते थे।

1930 के दशक में फासीवाद के उदय से पूरे यूरोप में राष्ट्रीय वैमनस्य की प्रक्रिया तेज हो गई और प्रथम विश्व युद्ध के अंत में राष्ट्रीय आत्म निर्धारण के सिद्धांत पर आधारित वर्साय की संधि की अवहेलना करने में मदद मिली। युद्ध अंतराल के समय पूर्वी यूरोप में राष्ट्रीय आंदोलनों और राष्ट्रवाद के विकास, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुई घटनाओं और अन्ततः तेहरान, पोट्सडैम और याल्टा में विजयी शक्तियों द्वारा किए गए समझौते से पूर्वी यूरोप राष्ट्र-राज्यों का नक्शा और पूरे यूरोप का राजनैतिक मानचित्र तैयार हो गया।

बोध प्रश्न 2

1) यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में उदारवादी जनतांत्रिक विचारों ने किस प्रकार मदद की ?

....

....

....

....

2) राष्ट्र-राज्यों के विकास में भाषा की क्या भूमिका थी ?

....

....

....

....

3) पूर्वी यूरोप में राष्ट्रवाद के उदय पर विचार कीजिए। लगभग 100 शब्दों में अपने उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

16.10 सारांश

इस इकाई में राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य पर विचार करते हुए हमने देखा कि राष्ट्र-राज्य के उदय के पूर्व राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार-प्रसार हुआ। यूरोप में राजनीति के प्रजातांत्रीकरण से भाषा और समाज के निर्माण जैसे मुद्दों को आधार बनाकर जनता को संगठित किया गया जिसने जनता के बीच राष्ट्रवाद की भावना फैलाई। आधुनिक राज्यों ने भी राष्ट्रवाद की भावना को आकार देने और राष्ट्र-राज्यों के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई। हमने इस बात पर भी विचार किया कि पूर्वी यूरोप में रूस को छोड़कर राष्ट्रीय भावनाओं को उभारने में सांस्कृतिक मुद्दों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

16.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (क) नहीं; (ख) नहीं; (ग) हां; (घ) हां

2) देखिए भाग 16.2 और 16.3

3) देखिए भाग 16.5

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 16.6.1

2) देखिए उपभाग 16.6.2 और 16.6.3

3) देखिए भाग 16.9